अंकुर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



130 वाँ अंक
अप्रैल 2024 से सितंबर 2024
राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017



कुर्सियों पर बाएं सेः

सुश्री मनीषा तूर (उप महालेखाकार), सुश्री तृप्ति गुप्ता (महालेखाकार),
श्री शीशराम वर्मा (वरिष्ठ उप महालेखाकार), श्री राकेश रंजन मिश्रा (सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव रा.का.स.)

खड़े हुए बाएं सेः

श्री अंकित कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), श्री शिवकेश (वरिष्ठ अनुवादक),
श्री मनीष कुमार (कनिष्ठ अनुवादक)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंकुर

130 वाँ अंक
अप्रैल 2024 से सितंबर 2024

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक : **सुश्री तृप्ति गुप्ता**
महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017

संरक्षक : **श्री शीशराम वर्मा**
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

मुख्य संपादक : **श्री राकेश रंजन मिश्रा**
सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव रा.का.स.

संपादन सहयोग : **श्री शिवकेश**
वरिष्ठ अनुवादक
सुश्री कविता शर्मा
वरिष्ठ अनुवादक
श्री अंकित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
श्री मनीष कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

मुख पृष्ठ : **जापानी गार्डन, चंडीगढ़**

अंक : **130 वाँ अंक**

प्रकाशक : **राजभाषा कार्यान्वयन समिति,**
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017

मूल्य : **राजभाषा के प्रति निष्ठा।**

मुद्रक : **कैपिटल ग्राफिक्स**
एस.सी.ओ. 133-135, सैक्टर 17-सी, चंडीगढ़।

नोट : रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

प्रकाशन विवरण	2
अनुक्रमणिका	3
गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश एवं राजभाषा सम्मेलन 2024 फोटो	4-6
संदेश	7-11
मुख्य संरक्षक का संदेश	12
संरक्षक का संदेश	13
संपादकीय	14

आलेख व कहानी

हिंदी की प्रगति में मीडिया की भूमिका	जिशान खान	16-17
फिजिकल से डिजिटल	राकेश वर्मा	18
वैश्वीकरण एवं भारत	जिशान खान	19-23
गरीबी: एक भयावह समस्या	जिशान खान	24-26
एक उम्मीद (कहानी)	प्रमोद वर्मा	27-31

कविता

जिंदगी	अंकित कुमार	40
माँ	संजय मीना	41
मेरा गाँव	संजय मीना	42
घर का कोना	जीशान खान	43
वो दिन	मनीष कुमार	44

कार्यालयीन समाचार

राजभाषा विशेष	45-46
खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियाँ	47
नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ एवं सेवानिवृत्तियां	48-49
मीडिया की नजर से	50

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)







माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री,

श्री अमित शाह

की अध्यक्षता में भारत मंडपम, दिल्ली में आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की झलक











सत्यमेव जयते

संजीव गोयल
महानिदेशक लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएं,
चंडीगढ़



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पत्रिका 'अंकुर' का 130 वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, बल्कि हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को भी प्रोत्साहित कर रही है। 'अंकुर' पत्रिका का उद्देश्य हमेशा से ज्ञानवर्द्धक और सुरुचिपूर्ण रचनाओं के माध्यम से हिंदी भाषा को बढ़ावा देना रहा है। मुझे विश्वास है कि इस अंक में भी पाठकों को उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री पढने को मिलेगी।

समस्त रचनाकारों के अथक परिश्रम और इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों के योगदान के कारण ही यह पत्रिका इतनी प्रभावशाली और प्रेरणादायक बन पाई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'अंकुर' पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार राजभाषा हिंदी के विकास में अपना योगदान देती रहेगी।

संजीव गोयल

सत्यमेव जयते

नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
हरियाणा, चंडीगढ़



संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय के द्वारा राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका 'अंकुर' के 130 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में एक कुशल एवं सार्थक पहल है। पत्रिका के निपुण संपादन एवं सहयोग के लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

भारत में सांस्कृतिक एवं भाषाई भिन्नता के मध्य हिंदी एक सेतु का कार्य करती है और सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य भी इसके माध्यम से बखूबी किया जा रहा है। इसी क्रम में हिंदी पत्रिका 'अंकुर' का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है जिसके द्वारा कार्यालय परिसर में आयोजित विभिन्न प्रकार की विभागीय गतिविधियों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों से हम अवगत होते हैं। पत्रिका न केवल अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने का कार्य कर रही है अपितु राजभाषा के प्रति उत्साह एवं रुचि भी उत्पन्न करती है। गुणवत्तापूर्ण, प्रासंगिक तथा विविध विषय पर आधारित रचनाएं इसका परिचायक है कि कार्यालय के कार्मिक पत्रिका को सुदृढ़ करने में अपना कुशल एवं अनुपम योगदान दे रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिका 'अंकुर' सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका 'अंकुर' के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई तथा पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

नवनीत गुप्ता

सत्यमेव जयते

शैलेन्द्र विक्रम सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हरियाणा, चंडीगढ़



संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के नवीनतम अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के विकास के साथ-साथ कार्मिकों को अपने विचारों को हिंदी में अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती हैं। ये पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

हिंदी हमारे देश की एकता और अखंडता की प्रतीक है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत,व्यापक और समृद्ध बनाया है। राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्ति के साथ ही हिंदी के दायित्वों में भी वृद्धि हुई है। यह हम सबका संवैधानिक दायित्व है कि हम सब अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में ही करें। हिंदी मात्र संवाद की भाषा नहीं है बल्कि भारत सरकार की नीतियों, जन उपयोगी योजनाओं, वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकारियों को देश के जन-मानस तक सुगमतापूर्वक पहुंचाने का सशक्त माध्यम भी है।

आशा करता हूं कि 'अंकुर' पत्रिका का आगामी अंक भी ज्ञानवर्द्धक एवं रुचिकर होगा। पत्रिका परिवार के संपादक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

सत्यमेव जयते

नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 130 वें अंक का प्रकाशन शीघ्र होने जा जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े सभी लेखकों तथा संपादक-मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देती हूँ जिनके सदप्रयासों से पत्रिका इस दीर्घ यात्रा में यहाँ तक पहुँचने में समर्थ हुई है।

भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिंदी भाषा को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिंदी भाषा की गूंज सुनने देने लगी है। देश में भी हिंदी भाषा विभिन्न संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है।

जहाँ एक ओर सरकार देश एवं विदेशों में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु अपने अथक प्रयास कर रही है वहीं दूसरी ओर कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं ने राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं कार्मिकों के बीच रचनात्मक लेखन एवं अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने हेतु एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'अंकुर' का सतत् प्रकाशन इस उद्देश्य की सफलता का परिचायक है।

मुझे विश्वास है कि 'अंकुर' का यह अंक भी हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और प्रयोग को बढ़ावा देने में प्रेरणात्मक सिद्ध होगा। "अंकुर" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

नाज़ली जे. शाईन

सत्यमेव जयते

के एस रामुवलिया

महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय),

चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "अंकुर" के 130 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि यह हमारे प्रशासनिक कार्यों की प्रभावशीलता और व्यापक संप्रेषण का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

आपकी प्रतिष्ठित हिंदी पत्रिका के उत्कृष्ट प्रकाशन और हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में आपके योगदान की मैं प्रशंसा करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके नेतृत्व में यह प्रयास सफल रहेगा और हिंदी को कार्यालयीन कार्यों में और अधिक प्रभावी रूप से स्थापित करने में सहायता मिलेगी।

के एस रामुवलिया

सत्यमेव जयते

तृप्ति गुप्ता
महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़



मुख्य संरक्षक का संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि गृह पत्रिका 'अंकुर'का 130वां अंक प्रकाशित हो रहा है। राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार सर्वत्र हो रहा है। 'अंकुर' पत्रिका का निरंतर सफलतापूर्वक प्रकाशन कार्यालय के कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा तथा हिंदी के प्रति प्रेम और समर्पण को दर्शाता है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता को जनमानस की उपयोगिता के लिए सूक्ष्मता से दर्शाने की क्षमता हिंदी में है।

केंद्र सरकार की राजभाषा नीति, आदेशों आदि को कार्यान्वित करने और वार्षिक कार्यक्रम के माध्यम से प्रसारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में हम सब को संगठित होकर काम करने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि 'अंकुर' पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति कार्मिकों का लगाव बढ़ाने के साथ-साथ इसके प्रगामी प्रयोग को गति प्रदान करने में सहायता प्रदान करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं शुभकामनाएं।

तृप्ति गुप्ता

सत्यमेव जयते

शीशराम वर्मा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं यू.टी.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़



संरक्षक का संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 130 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी देश की संपर्क भाषा है। यह भाषा देश के सभी प्रांत के लोगों को आपस में जोड़कर रखने का काम करती है।

सरकारी कामकाज में अंग्रेजी के व्यापक प्रयोग को समाप्त कर राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए कार्यालयीन स्तर पर न सिर्फ प्रयास किए जा रहे हैं बल्कि हिंदी के प्रति रूचि और विश्वास को बढ़ाने के लिए अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं। प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना के द्वारा हिंदी का विकास तथा प्रचार-प्रसार संभव है।

'अंकुर' पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए शुभकामनाएं।

शीशराम

शीशराम वर्मा

सत्यमेव जयते



संपादकीय

हिंदी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध निर्मित करने की रही है। हिंदी भाषा केवल सम्प्रेषण की भाषा नहीं रह गई है बल्कि व्यापार, कामकाज, प्रोद्योगिकी आदि की भाषा भी है। हमें हिंदी के विकास, प्रचार-प्रसार में निरंतर प्रयत्नशील रहने की जरुरत है।

मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखा है:

मेरी भाषा में तोते भी राम-राम जब कहते हैं, मेरे रोम-रोम से मानो सुधा-स्रोत तब बहते हैं।

सब कुछ छुट जाए मैं अपनी भाषा कभी न छोडूंगा, वह मेरी माता है उससे नाता कैसे तोडूंगा।

मैथिलीशरण गुप्त जी की ये पंक्तियाँ न सिर्फ भाषा के प्रति उनके प्रेम को दर्शाती हैं बल्कि उन्होंने भाषा की तुलना माता से करके अनंतकाल तक इसके महत्त्व को जीवंत रखने का भी काम किया है। हिंदी ने प्राचीन अर्थ से वर्तमान अर्थ तक आते-आते कई शताब्दियों की यात्रा की है। वर्षों से हिंदी या इसकी विभिन्न बोलियाँ ने लोगों को आपस में जोड़ने का काम किया है। हमें इन पंक्तियों से सीख लेनी चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हिंदी के प्रचार-प्रसार में अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करें| हिंदी हमारे जीवन मूल्यों, कला और संस्कृति की सच्ची संवाहक और परिचायक है। राष्ट्रीय महत्त्व से जुड़े होने के बावजूद सरकार ने हिंदी भाषा के प्रयोग को बलपूर्वक नहीं थोपा है बल्कि प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना के जरिए इसे प्रसारित करने का प्रयास किया है। सरकारी कार्यालयों में प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाएं इसी प्रयास का अंश है।

अंकुर पत्रिका का यह नवीन अंक नई रचनाओं के साथ-साथ इस कार्यालय के कई यादगार लम्हों को भी दर्शाता है। आशा है आप अपनी अनमोल प्रतिक्रियाएं देकर इसे और भी बेहतर बनाने के लिए सहयोग प्रदान करेंगे।

जय हिंद! जय हिंदी!

राकेश रंजन मिश्रा

सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव रा.का.स.


आलेख व कहानी

हिंदी की प्रगति में मीडिया की भूमिका

(पुरस्कृत लेख – हिंदी पखवाड़ा 2024)



जीशान खान

प्रस्तावना: हिंदी भाषा देश की बुनियाद है, जिसने पुरे भारत देश को एक माला में बाँधा हुआ है। यह देश की सांस्कृतिक विरासत का सूत्रधार है। हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के लिए भारत सरकार ने राजभाषा अधिनियम बनाया हुआ है। यह भाषा भारत देश को सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तौर से जोड़ने का कार्य करती है। भारत विविधताओं भरा देश है, विभिन्न संस्कृति के लोगों तथा उनके बीच आचार-विचार का आदान-प्रदान हिंदी द्वारा बखूबी किया जा रहा है।

मीडिया की भूमिका:

आज के तकनीकी युग में जहाँ पर मीडिया की पहुँच घर-घर तक पहुंची हुई है, वहां पर मीडिया के प्रभावी एवं शक्तिशाली प्रणाली को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है।

मीडिया के प्रकार:

1)रेडियो :-

रेडियो मनोरंजन का अत्यधिक पुराना स्रोत है। इसपे मनोरंजन के कार्यक्रम प्रसारित कर हिंदी भाषा को सुदृढ़ एवं सशक्त बनाया जा सकता है। समाज के विभिन्न श्रेणी के लोगों को ध्यान में रखकर उनके लिए मनोरंजक तरीके से हिंदी भाषा को मजबूत बनाया जा सकता है।

2) टेलीविजन: टेलीविजन के द्वारा हिंदी के प्रसार को नई बुलंदियों तक पहुँचाया जा सकता है। विभिन्न कार्यक्रमों, नाटकों एवं विस्तृत तंत्र के जरिए हिंदी को हर घर की भाषा बनाया जा सकता है। 90'sके जमाने में महाभारत, चन्द्रकान्ता, विक्रम बेताल जैसे अनेक कार्यक्रमों ने हिंदी को सशक्त करने का प्रयास किया है। मनोरंजन के साथ हिंदी में शिक्षा सामग्री प्रस्तुत कर बच्चों के कोमल मन पर अमिट छाप छोड़ी जा सकती है।

3) सोशल मीडिया:- आज का युग सोशल मीडिया का युग है। इसकी पहुँच का अंदाजा इसके दर्शकों की संख्या से लगाया जा सकता है। राजभाषा विभाग एवं अन्य संगठन इसका प्रयोग करके हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

सोशल मीडिया के द्वारा हिंदी के प्रख्यात लेखकों को प्रचारित किया जा सकता है ताकि उनके काम को ख्याति मिलने के साथ हिंदी की कहानियों, कविताओं एवं रचनाओं के माध्यम से हिंदी की प्रगति में भूमिका निभाई जा सके।

4) किताबें:- किताबों के द्वारा हिंदी भाषा को बोलचाल की भाषा बनाया जा सकता है। प्रेमचंद, हरिवंशराय बच्चन, रामधारी सिंह दिनकर के साहित्यों द्वारा तथा कबीर, तुलसीदास एवं मीराबाई के दोहों और छंदों द्वारा हिंदी के माध्यम से भारत को एक धागे में बांधा जा सकता है।

5) प्रिंट मीडिया:- प्रिन्ट मीडिया जैसे समाचार पत्र, मैगजीन एवं संपादकीय के माध्यम से पूरे विश्व में चर्चित एवं घटित घटनाओं को

हिंदी भाषा के जरिए आम जन मानस तक पहुंचाने का कार्य करते हैं। हिंदी भाषा के प्रोत्साहन के लिए समाचार पत्र बच्चों के लिए अनेक मनोरंजक गतिविधियों से भरपूर होते हैं जिनसे वे खेल-खेल में हिंदी के प्रचार एवं प्रसार का माध्यम बनते हैं।

इन सभी माध्यमों से हिंदी को प्रचारित एवं प्रसारित होने में मदद मिलती है।

हिंदी भाषा को सशक्त करने में निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए:-

1. हिंदी केंद्रित शिक्षा सामग्री वितरित की जानी चाहिए।

2. सोशल मीडिया एवं यू ट्यूब पर हिंदी भाषा को बढ़ाने के लिए अनेक कार्यक्रमों का सहारा लिया जा सकता है, जिससे हिंदी भाषा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हो सके।

3. हिंदी भाषी मैगजीन के द्वारा हिंदी के शब्द, कविता एवं कहानियों को फैलाया जा सकता है।

4. सामुदायिक भागीदारी, सामाजिक जागरूकता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से हिंदी के प्रचार-प्रसार को बल दिया जा सकता है।

5. मीडिया का उपयोग करके सामाजिक पूर्वाग्रहों को बदलने की जरूरत है जैसे अंग्रेजी एवं हिंदी दोनों भाषाएं हैं लेकिन अंग्रेजी जानने वाला ज्यादा बुद्धिमान है तो यह तथ्यहीन बात है।

हिंदी भाषा फले फूले इसमें अपने देश का गौरव है। यह केवल भाषा नहीं बल्कि हमारा स्वाभिमान है। इसके प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी हर एक भारतीय की है।

आज के इस तकनीक भरे युग में जहां सारे देश सोशल मीडिया के द्वारा जुड़े हुए हैं। अतः यह हमारा कर्त्तव्य एवं दायित्व बनता है कि इसके सशक्तिकरण के लिए प्रयासरत रहें।

हिंदी के गौरव को बढ़ाने के लिए समाज को आगे आना पड़ेगा जिससे यह प्रचार-प्रसार केवल कोरी कल्पना बनकर न रह जाए बल्कि जन आंदोलन का रूप ले तभी हमारे प्रयास सार्थक होंगे।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है
- सुमित्रानंदन पंत

फिजिकल से डिजिटल



राकेश वर्मा

इस नवयुग की शुरुआत से ही मानव निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस धरती पर जब से मानव का अस्तित्व हुआ है तब से लेकर आज तक मनुष्य के विकास की गति, पृथ्वी की गति से भी अधिक होती जा रही है। विकास के इस चरण के फिजिकल से डिजिटल स्वरूप का हम विश्लेषण करेंगे। आज से दो दशक पहले जब भारत में शुरुआती तौर पर कंप्यूटर प्रचलन में आया तब से लेकर आज तक के सफर का आँखों देखा वर्णन आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

1. हाय डिजिटल ये जमाना हो गया,
फाइल, रजिस्टर और वाउचर का ढ़ेर
चले हम जमाना हो गया
हाय डिजिटल ये जमाना हो गया।

2. ई-मेल, टेक्स्ट फाइल, गूगल शीट का जमाना हो गया,
टिप्पणी, पत्र, परिपत्र एवं कार्यालय आदेश फाइल से निकल कर ई फाइल हो गए
रिपोर्ट सारे ऑनलाइन हो गए।
धूल फाँकती फाइल देखे जमाना हो गया,
हाय डिजिटल ये जमाना हो गया।

3. सफर ई ऑफिस से ई-एच.आर.एम.एस. तक का
ई मेल से गूगल मीट, ज़ूम, ज़ोमेटो का जमाना हो गया,
हाय डिजिटल ये जमाना हो गया।

4. डिजिटलीकरण से पेंशन ओथराइजेशन छः माह से एक माह हो गया,
मासिक लेखा का 25 से 10 हो गया, कर्मचारी साढ़े नौ से साढ़े पाँच हो गया,
हाय डिजिटल ये जमाना हो गया।

5. लगता है सब कुछ आसान हो गया,
जीवन ट्रांसफॉर्म हो गया डिजिटल का सकारात्मक रूप देखकर,
लेकिन जब देखा डीप फेक, डिजिटल अरेस्ट और साइबर हैकिंग का प्रभाव
तब लगता है डिजिटल फँसाना हो गया।

ए आई (A.I.) और मशीन लर्निंग का रूप अभी देखना बाकी है,
जो करेगा मानव की भाषा, I.Q. और कल्पना का विस्तार
लेकिन जब होगा इसका प्रचंड अवतार तब कहेंगे क्या होगा रब जाने,
मानव हो गया या डिजिटल हो गया, हाय डिजिटल ये जमाना हो गया।
मासिक लेखा, वित्तीय लेखा या हो समीक्षा रिपोर्ट,
R.B.D. या ई कुबेर ट्रांजेक्शन, वेतन का स्टेटमेंट
आज कल ये सारा ऑनलाइन हो गया
हाय डिजिटल ये जमाना हो गया।

वैश्वीकरण एवं भारत



जीशान खान

भारत और वैश्वीकरण:-

वैश्वीकरण (Globalization) एक विश्व अर्थव्यवस्था की प्रक्रिया है जो विभिन्न देशों और संस्थाओं के बीच व्यापार, वित्तीय प्रणालियों, तकनीकी और सांस्कृतिक मेल-जोल को बढ़ावा देती है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप वैश्वीकरण ने अनेक देशों के बीच संचार, व्यापार और सहयोग के क्षेत्र में गहरा प्रभाव डाला है। इस प्रकार वैश्वीकरण न केवल अर्थव्यवस्था को बदल देता है, बल्कि समाज और संस्कृति में भी विशेष परिवर्तन लाता है। इसके द्वारा हमारी दुनिया एक गाँव की तरह लगने लगी है, जहाँ अलग-अलग देशों के लोग एक-दूसरे के साथ बातचीत कर रहे हैं और आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं अन्य संबंधों में एक-दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं।

वैश्वीकरण की शुरुआत इस आधुनिक युग में शुरू हुई है जब तकनीकी उन्नति, वित्तीय विकास और नए व्यापार मॉडल्स ने अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को भी पार कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन और सेवा प्रदान करने के तरीकों में सुधार हुआ है। अब एक उत्पाद या सेवा की उत्पत्ति और उपभोक्ता तक पहुंचाने की प्रक्रिया गतिशील, व्यापक और अंतर्राष्ट्रीय हो गई है।

वैश्वीकरण के कई पहलू हैं जिनमें व्यापार, वित्त, संस्कृति, नई तकनीक आदि शामिल हैं। अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापार की स्वतंत्रता और स्थिरता में वृद्धि ने विश्व के कई हिस्सों में आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है। इसके साथ ही विभिन्न देशों के बीच वित्तीय प्रणालियों के आपसी संबंध ने अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक आदान-प्रदान और संचार में भी वृद्धि हुई है। विभिन्न देशों के लोग अब आसानी से एक दूसरे की संस्कृति, भाषा और विचारों को समझ सकते हैं। इससे सांस्कृतिक विविधता बढ़ी है और लोगों के बीच समानता और सहयोग का आभास होता है।

हालांकि वैश्वीकरण के साथ ही कई विवाद भी उत्पन्न हुए हैं। इससे असमान अर्थव्यवस्थाओं एवं आर्थिक असंतुलन की चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। विशेष रूप से वैश्वीकरण ने कुछ क्षेत्रों में विश्व में असमानता और अधिकारों के असंतुलन को बढ़ावा दिया है। कुछ लोग वैश्वीकरण को अधिकतम धन के इकट्ठा करने का प्रतीक मानते हैं, जिससे धन की बाढ़ और असमानता में वृद्धि होती है। इसके साथ ही वैश्वीकरण से कुछ लोगों को तकनीकी असमर्थता और नौकरी की हानि के खतरे से गुजरना पड़ा है। इसके परिणामस्वरूप अनेक लोग आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं और असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। वैश्वीकरण के इस विस्तार के साथ सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव भी हैं।

वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव:

1. अर्थव्यवस्था में सुधार: वैश्वीकरण ने अर्थव्यवस्था को विश्वस्तर पर मजबूत किया है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश के माध्यम से अनेक देशों के लोगों को नई वस्तुओं और सेवाओं का लाभ मिलता है, जिससे अर्थव्यवस्था में मजबूती आती है।
2. तकनीकी उन्नति: वैश्वीकरण ने तकनीकी उन्नति को बढ़ाया है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण, नई तकनीकों का विकास हो रहा है, जिससे सेवाओं का लाभ आसानी से लिया जाएगा।
3. सांस्कृतिक आदान-प्रदान: वैश्वीकरण के कारण लोग अन्य देशों की सांस्कृतिक विविधता से जुड़ने के साथ-साथ उसे समझ भी रहे हैं। यह विविधता भावनाओं और विचारों के विस्तार को बढ़ाती है और सामाजिक मजबूती को बढ़ाती है।
4. रोजगार का बढ़ना : वैश्वीकरण ने नौकरियों में भी इजाफा किया है। अब लोग अन्य देशों में नौकरियों की खोज कर रहे हैं और अन्य क्षेत्रों में अधिक अवसरों का लाभ उठा रहे हैं।
5. विदेशी निवेश: वैश्वीकरण ने विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया है, जिससे नवीनतम तकनीकी से उत्पादन में वृद्धि हुई है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिला है।

6. राजनीतिक और सामाजिक आदान-प्रदान: वैश्वीकरण के कारण राजनीतिक और सामाजिक आदान-प्रदान में भी वृद्धि हो रही है। लोकतंत्र के माध्यम से लोगों के विचारों को संस्थाओं के साथ साझा किया जा सकता है । साथ ही समाज में विभिन्न समूहों के बीच संवाद और समझौते का माध्यम बनता है, जो समाज में सहमति को बढ़ाता है।

7. शिक्षा और ज्ञान का प्रसार: वैश्वीकरण के कारण शिक्षा और ज्ञान का अधिक प्रसार हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के माध्यम से विभिन्न देशों के छात्र और शोधकर्ता एक-दूसरे के अनुभवों से लाभ उठा रहे हैं और नए ज्ञान को साझा कर रहे हैं।

8. सूचना की पहुंच: वैश्वीकरण के कारण सूचना की पहुंच में भी सुधार हो रहा है। अब लोग आसानी से अन्य देशों के समाचार और सूचना तक पहुंच सकते हैं, जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि होती है।

9. स्वतंत्रता की बढ़ती चेतना: वैश्वीकरण के कारण लोगों के बीच स्वतंत्रता की बढ़ती चेतना हो रही है। लोग अधिक आत्मनिर्भर बन रहे हैं और अपने अधिकारों के लिए सामूहिक रूप से लड़ रहे हैं।

वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव:-

1. स्थानीय उत्पादन की हानि: वैश्वीकरण के कारण कुछ स्थानीय उत्पादकों को अन्य देशों के उत्पादकों के साथ मुकाबला करने में कठिनाई हो रही है, जिससे उनकी हानि हो रही है।

2. आर्थिक असमानता: वैश्वीकरण के कारण आर्थिक असमानता बढ़ रही है। कुछ अमीर देशों का सामरिक और आर्थिक अधिकार बढ़ता जा रहा है, जबकि कुछ गरीब देश पीछे छूट रहे हैं।

3. पर्यावरणीय प्रभाव: वैश्वीकरण के कारण पर्यावरणीय प्रभाव भी हो रहे हैं। अधिक उत्पादन और उच्च उपभोक्ता श्रेणी की मांग के कारण पर्यावरण को अधिक दबाव में डाला जा रहा है।

4. सामाजिक संरक्षण की हानि: वैश्वीकरण के साथ सामाजिक संरक्षण की हानि हो रही है। लोगों के बीच नौकरी की प्रतिस्पर्धा और आर्थिक संकट के कारण सामाजिक संरक्षण की स्थिति कमजोर हो रही है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप कुछ लोग विभिन्न सामाजिक समूहों से वंचित हो रहे हैं और उनके अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है।

5. स्थानीय विविधता की हानि: वैश्वीकरण के कारण स्थानीय विविधता की हानि हो रही है। अन्य देशों से स्पर्धा के कारण कुछ स्थानीय वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और खपत बाधित हो रही है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था कमजोर हो रही है।

6. सामाजिक संगठनों की कमजोरी: वैश्वीकरण के कारण कुछ सामाजिक संगठनों की कमजोरी दिखाई दे रही है। अन्य देशों की सामाजिक और आर्थिक प्रवृत्तियों के प्रभाव के कारण कुछ स्थानीय संगठनों की समृद्धि का संघर्ष हो रहा है, जिससे उनकी प्रभावशीलता कम हो रही है।

7. सामाजिक और आर्थिक तनाव: वैश्वीकरण के साथ सामाजिक और आर्थिक तनाव में वृद्धि हो रही है। लोगों के बीच संसाधनों के बाँटने के मामले में विवाद हो रहा है और आर्थिक व सामाजिक द्वंद्व बढ़ रहे हैं।

8. भौगोलिक संतुलन की अस्थिरता: वैश्वीकरण के कारण भौगोलिक संतुलन की अस्थिरता हो रही है। कुछ क्षेत्रों में उत्पादन की बढ़ती मांग के कारण पर्यावरणीय और सामाजिक संतुलन पर बदलाव आ रहा है, जिससे भौगोलिक संतुलन की अस्थिरता बढ़ रही है।

वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों के मध्यवर्ती स्थिति में हमें एक संतुलित दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता है। वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों को बढ़ावा देते हुए हमें नकारात्मक प्रभावों के उपाय ढूंढने की जरूरत है। इसके लिए सरकारों, संगठनों और समाज के सभी सेक्टरों को मिलकर काम करने की आवश्यकता है ताकि हम सकारात्मक प्रभावों को बढ़ावा दे सकें।

वैश्वीकरण का महिलाओं पर प्रभाव बहुआयामी और जटिल है जो आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहलुओं को शामिल करता है। हालांकि वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए कुछ अवसर पैदा किए हैं लेकिन इससे जेंडर असमानता में भी वृद्धि हुई है और नई चुनौतियां उत्पन्न हुई हैं।

सकारात्मक प्रभाव:

1. आर्थिक अवसर: वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए नए आर्थिक अवसरों को खोला है जिससे उनकी आर्थिक मजबूत हुई है। उद्योगों और बाजारों के विस्तार के साथ महिलाएं निर्माण, सेवाओं और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में नौकरियां प्राप्त कर रही हैं, जिससे उनका आर्थिक सशक्तिकरण हो रहा है।
2. उद्यमिता (Industrialisation): वैश्वीकरण ने उद्यमिता को सरल बनाया है जिससे अंतरराष्ट्रीय बाजार, संसाधनों और नेटवर्कों तक पहुंच मिली है। महिला उद्यमियों के माध्यम से डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर अपना व्यापार शुरू कर रही हैं, जिससे पारंपरिक जेंडर भूमिकाओं और स्टिरियोटाइप्स का मुकाबला हो रहा है।
3. शिक्षा और कौशल विकास: वैश्वीकरण ने शिक्षा और कौशल विकास के महत्व पर जोर दिया है, जिससे महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त किया है। शिक्षा के अवसर और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने महिलाओं को गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में करियर बनाने और उनकी कमाई के सामर्थ्य को बढ़ाया है।
4. जागरूकता और प्रचार: वैश्वीकरण ने महिलाओं के अधिकारों और लैंगिक समानता के बारे में जागरूकता और प्रचार के प्रयासों को बढ़ाया है। इंटरनेट के नेटवर्क्स और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई हैं।
5. महिला कोटा में समावेश: वैश्वीकरण ने नारी कोटा में समावेश को बढ़ावा दिया है। अंतर्राष्ट्रीय समुदायों और संगठनों के माध्यम से महिलाएं अपनी आवाज को सुनाने और अपने हित के लिए लड़ने के लिए संगठित हो रही हैं।
6. शासन और नीतियों में भागीदारी: वैश्वीकरण ने महिलाओं के शासन और नीतियों में अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया है। वहाँ अधिक महिला नेताओं का उभरता समर्थन है, जो समाज में न्याय और समानता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।
7. गृहिणियों के आर्थिक समर्थन: वैश्वीकरण ने गृहिणियों के आर्थिक समर्थन में सुधार किया है। अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से महिलाएं वित्तीय सहायता, ऋण और वित्तीय संसाधनों का उपयोग कर अपने स्वपनों को पूरा करने में सक्षम हो रही हैं।
8. गांवों में स्वास्थ्य और शिक्षा की पहुंच: वैश्वीकरण ने गांवों में महिलाओं के स्वास्थ्य और शिक्षा की पहुंच में सुधार किया है। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और सरकारों के प्रोग्रामों के माध्यम से महिलाएं वैश्विक स्वास्थ्य और शिक्षा मुद्दों को समझने और समाधान करने के लिए सक्षम हो रही हैं।

ग्लोबलाइजेशन का महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव है, जो समाज, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तरों पर महसूस होता है:-

1. सामाजिक असमानता: ग्लोबलाइजेशन के कारण समाज में अधिक सामाजिक और आर्थिक असमानता बढ़ गई है, जिससे महिलाओं को अधिक प्रभावित किया जाता है। उन्हें अधिक आर्थिक और सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ता है और उनकी पहुंच और समानता में कटौती होती है।
2. स्वास्थ्य प्रभाव: ग्लोबलाइजेशन के साथ, खाद्य और औषधीय उत्पादों के वितरण में बदलाव आया है, जिससे महिलाओं की स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. शिक्षा की पहुंच: ग्लोबलाइजेशन के साथ शिक्षा की पहुंच में सुधार होता है, लेकिन समाज में महिलाओं को इसका उत्तरदायित्व मिलता है। कुछ उन्नत देशों में महिलाओं की शिक्षा की पहुंच में आधिकारिक संशोधन होता है, लेकिन अधिकांश उत्पादक देशों में इसमें कटौती होती है।

ग्लोबलाइजेशन के इन प्रभावों के कारण महिलाएं आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य स्तरों पर अधिक प्रभावित होती हैं। उन्हें अपने अधिकारों की सुरक्षा और समर्थन की आवश्यकता होती है, ताकि वे इस प्रकार के नकारात्मक प्रभावों का सामना कर सकें।

वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों में वृद्धों के लिए कई चुनौतियाँ शामिल हैं। यहां कुछ मुख्य नकारात्मक प्रभावों का उल्लेख किया जा सकता है:-

1. सामाजिक दूरी: वैश्वीकरण के कारण परिवारों के बंधन कमजोर हो रहे हैं और आधुनिक जीवनशैली में वृद्ध लोगों को सामाजिक आइसोलेशन का सामना करना पड़ रहा है। अधिकांश समय का व्यतीत करना और वैश्विक तकनीकी उन्नति के द्वारा परिवारों के सदस्य अधिक स्वतंत्र और अलग हो रहे हैं, जिससे वृद्ध लोगों को अकेलेपन का अनुभव होता है।
2. आर्थिक असुरक्षा: वैश्वीकरण के प्रभाव से, पेंशन सुरक्षा में कमी, उत्पादकता से बाहर होने और महंगाई के बढ़ते दबाव के कारण बहुत से वृद्ध लोग आर्थिक असुरक्षा का सामना कर रहे हैं। यह उन्हें आधुनिक समय के खर्चों और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में सीमित करता है।
3. स्वास्थ्य समस्याएँ: वैश्वीकरण के कारण खाद्य और परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन, शारीरिक अभ्यास की कमी और आधुनिक जीवनशैली की वजह से वृद्ध लोगों में स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ रही हैं। उन्हें अधिक आयुर्वेदिक दवाओं और चिकित्सा सेवाओं की आवश्यकता होती है, जिससे उनका आर्थिक दबाव बढ़ता है।
4. सामाजिक आधार खोना: वैश्वीकरण के साथ, सामाजिक और पारंपरिक संरचनाओं का अस्तित्व कमजोर हो रहा है। यह वृद्ध लोगों को उनके परंपरागत समूहों और संबंधों से अलग कर सकता है, जिससे उन्हें अकेलेपन और असुरक्षा का अनुभव हो सकता है।
5. तकनीकी असमर्थता: वैश्वीकरण के साथ तकनीकी उपयोग और उन्नति की तरह कुछ वृद्ध लोगों को स्थायी संपर्क से वंचित कर सकता है। डिजिटल विभाजन के कारण वे सोशल मीडिया ऑनलाइन खरीददारी और अन्य ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग नहीं कर पा सकते हैं, जिससे उनका समर्थन कम हो सकता है।

ग्लोबलाइज़ेशन का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव है, जो उनके समाज, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करता है:-

1. उद्योगों में संदर्भों की कठिनाई: ग्लोबलाइजेशन के कारण उद्योगों में संदर्भों की कठिनाई बढ़ गई है और युवाओं को अच्छी नौकरियों के लिए प्रतिस्पर्धा में ज़्यादा मुश्किल हो गई है। वे बाजार में अधिक असुरक्षित और अस्थायी नौकरियों के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।
2. संगीत और मनोरंजन की अप्रत्याशित बढ़ोतरी: ग्लोबलाइजेशन के साथ विदेशी संगीत, फिल्में और मनोरंजन का प्रचार बढ़ गया है, जो युवाओं को अधिक आकर्षित करता है। यह उन्हें अपनी स्थानीय संस्कृति और मूल्यों के प्रति उदासीन बनाता है।
3. शिक्षा में संशोधन: ग्लोबलाइज़ेशन के साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है, लेकिन समाज में युवाओं के शिक्षा प्राप्त करने की प्रतिभा की तुलना में और कठिन किया गया है। उन्हें अधिक शिक्षा के लिए अधिक पैसे खर्च करने की आवश्यकता होती है और यह आर्थिक दबाव बढ़ाता है।
4. तकनीकी बेकारी: ग्लोबलाइजेशन के साथ तकनीकी उन्नति के कारण कुछ युवा बेरोजगारी का सामना कर रहे हैं क्योंकि उनके पास आवश्यक तकनीकी कौशल नहीं हैं।

इन सभी प्रभावों के कारण युवा आर्थिक, सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर अधिक प्रभावित होते हैं। उन्हें इन चुनौतियों का सामना करने और अपने अधिकारों की सुरक्षा के लिए सक्रिय रूप से काम करने की आवश्यकता है।

ग्लोबलाइजेशन के आगमन के साथ भारत के लिए नई संभावनाओं और चुनौतियों का सामना हुआ है। इसके लाभ और हानियों को समझते हुए निम्नलिखित समापन निकाले जा सकते हैं:

1. सामाजिक और आर्थिक विकास: ग्लोबलाइजेशन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दी है और उसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में विश्वस्त बनाया है। यहां तक कि विदेशी निवेश और व्यापार के साथ-साथ सामाजिक विकास में भी वृद्धि हुई है।

2. कार्य और उत्पादन: ग्लोबलाइजेशन के प्रभाव से भारतीय कंपनियों के विश्वव्यापी कारोबार और उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है, जिससे उन्हें अधिक फैला हुआ बाजार मिला है।
3. तकनीकी उन्नति: ग्लोबलाइजेशन के साथ भारतीय तकनीकी क्षेत्र में भी वृद्धि हुई है, जिससे उन्नत और विश्वस्त तकनीकी साधनों का उपयोग किया जा सकता है।
4. विदेशी निवेश: ग्लोबलाइजेशन ने भारत में विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया है, जिससे और अधिक नौकरियों की सम्भावनाएं उत्पन्न हो रही हैं।
5. सांस्कृतिक विविधता: ग्लोबलाइजेशन ने भारतीय समाज को विश्व सांस्कृतिक विविधता से रूबरू कराया है, जिससे भारतीय समाज की सोच और व्यवहार में परिवर्तन आया है।

अखिरकार ग्लोबलाइजेशन ने भारत को एक विश्वस्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ाने के लिए नई संभावनाओं का संवाद खोला है, लेकिन इसके साथ ही इसने चुनौतियों का भी सामना करना होगा। भारत को अपने विश्वासी लक्ष्यों की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए ग्लोबल साझेदारी का उपयोग करने की आवश्यकता है, साथ ही राष्ट्रीय हित में सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय रूप से नीतियों को संशोधित करने की आवश्यकता है।

ग्लोबलाइजेशन के आगमन से भारत की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना में कई परिवर्तन आए हैं। इसके परिणामस्वरूप, देश में नए विकास के माध्यमों और अवसरों का सृजन हुआ है। हालांकि यह साथ ही नई चुनौतियों और संकटों का भी संवाद बनाता है। ग्लोबलाइजेशन के दौरान विदेशी निवेश और विदेशी व्यापार की बढ़ती चाह भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा देने में मदद करता है। इससे नौकरियों की सम्भावनाएं बढ़ती हैं और उत्पादन और सेवाओं की वृद्धि होती है। वैश्वीकरण के समान समय में वैश्विक समृद्धि की संभावनाएं भी हैं। वैश्वीकरण की सफलता और उपयोगिता उसकी प्रणालियों और नीतियों पर निर्भर करेगी, जो समाज के साथ-साथ लोगों के लाभ के लिए हो। इसके प्रत्येक पहलू को समझना महत्वपूर्ण है, ताकि हम सकारात्मक परिणामों को बढ़ावा दें और उन्हें सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति के लिए उपयोगी बनाएं। इसके साथ ही ग्लोबलाइजेशन के प्रभाव से भारतीय उत्पादों को विदेशी बाजारों में प्रवेश करने के लिए नए अवसर प्राप्त होते हैं। यह नई तकनीकी और उत्पादन क्षमताओं का विकास करता है और अन्ततः देश की आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहित करता है।

हालांकि इसके साथ ही कुछ चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। ग्लोबलाइजेशन के कारण अनेक उद्योगों में कटौती होती है और नौकरियों की संख्या में कमी होती है। साथ ही अर्थव्यवस्था की अस्थिरता और वित्तीय बाजारों की स्थिति में बदलाव के खतरे भी होते हैं। इसके अलावा स्थानीय उत्पादों के प्रति विदेशी उत्पादों की भरमार भी रहती है, जो कई बार स्थानीय उत्पादकों को नुकसान पहुंचाती है।

इसलिए भारत को ग्लोबलाइजेशन के अवसरों को सही तरीके से काम में लेना होगा और साथ ही इसकी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। यह उचित नीतियों, सरकार एवं नागरिकों को साथ मिलकर काम करने और उद्योगों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने की आवश्यकता को प्रकट करता है। इसके अलावा, स्थानीय उत्पादों की रक्षा और समर्थन करने के लिए कठिन उपाय अपनाए जाने चाहिए। इस तरह की उचित नीतियों और कठिन प्रयासों के माध्यम से, भारत ग्लोबलाइजेशन के माध्यम से अपने लक्ष्यों की दिशा में आगे बढ़ सकता है और सामूहिक विकास के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। हमें अपने देश के विकास के लिए नए जमाने के साथ मिलकर चलना होगा ताकि हम नई ऊंचाइयों को छू सकें एवं एक मजबूत भारत का निर्माण कर सकें।

गरीबी: एक भयावह समस्या



जीशान खान

भारत दुनिया के सबसे बड़े और विकासशील देशों में से एक है लेकिन इस देश में गरीबी एक बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। गरीबी के कारण सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का जन्म होता है। हालांकि, भारत में गरीबी की दर में कमी आई है, फिर भी करोड़ों लोग आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन कर रहे हैं। गरीबी केवल एक आर्थिक समस्या नहीं है बल्कि यह सामाजिक असमानता, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार से भी जुड़ी हुई है।

गरीबी के कारण

भारत में गरीबी के काफी कारण हैं जो मुख्य रूप से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं से जुड़े हुए हैं। नीचे कुछ प्रमुख कारणों का वर्णन किया गया है:

1. आर्थिक असमानता

भारत में आमदनी और संपत्ति में भारी असमानता है। कुछ लोग बहुत अमीर हैं, जबकि ज्यादातर लोग आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच की खाई गरीबी को बढ़ाती है। आर्थिक असमानता का सीधा असर गरीबों पर पड़ता है जो बेहतर जीवन स्तर को जी नहीं पाते।

2. शिक्षा की कमी

शिक्षा की कमी भी गरीबी का एक प्रमुख कारण है। गरीब परिवारों के बच्चे अक्सर उचित शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं, जिससे उनकी कौशल क्षमता में कमी आती है। इसके कारण उन्हें अच्छी नौकरी नहीं मिलती और उनका जीवन स्तर सुधारने के लिए जरूरी साधन उपलब्ध नहीं होते।

3. स्वास्थ्य सेवाओं की कमी

गरीबों के पास अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच नहीं होती। इसके कारण वे गंभीर बीमारियों का शिकार होते हैं, जिससे उनका जीवन प्रभावित होता है और उनकी आय में कमी आती है। इससे गरीबी की समस्या और गंभीर हो जाती है।

4. कृषि क्षेत्र में समस्याएं

भारत का अधिकांश हिस्सा कृषि पर निर्भर है, लेकिन इस क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी संसाधनों की कमी है। कृषि उत्पादन में उतार-चढ़ाव, मौसम की असमानता और कृषि योजनाओं की कमी के कारण किसान गरीब हो जाते हैं। कृषि क्षेत्र में बेरोजगारी और आर्थिक असमानता बढ़ने से भी गरीबी की स्थिति पैदा होती है।

5. राजनीतिक अस्थिरता और भ्रष्टाचार

भारत में राजनीतिक अस्थिरता और भ्रष्टाचार भी गरीबी को बढ़ावा देने वाले हैं। कई बार सरकारी योजनाओं का सही तरीके से पालन नहीं होता और भ्रष्टाचार के कारण गरीबों को योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता। इससे गरीबी की समस्या और भी बढ़ जाती है।

गरीबी के प्रभाव

गरीबी के कई गंभीर सामाजिक, आर्थिक और मानसिक प्रभाव होते हैं। ये प्रभाव समाज के अलग-अलग वर्गों पर पर असर डालते हैं। कुछ प्रभाव निम्नलिखित हैं:

1. शिक्षा और कौशल विकास की कमी

गरीबी का सबसे बड़ा प्रभाव शिक्षा पर पड़ता है। गरीबी से प्रभावित बच्चों को स्कूल जाने का अवसर नहीं मिलता, जिससे उनकी

शिक्षा पर प्रतिकूल असर पड़ता है। उन्हें जीवन में अपने आर्थिक हालात सुधारने के लिए उचित अवसर नहीं मिलते हैं।

2. स्वास्थ्य समस्याएं

गरीबी के कारण लोग उचित स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त नहीं कर पाते है, उन्हें बीमारियों से बचने के लिए आवश्यक पोषण और स्वास्थ्य सेवाएं नहीं मिल पातीं। इससे उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ता है और यह गरीबी के चक्र को और मजबूत करता है।

3. सामाजिक असमानता

गरीबी सामाजिक असमानता को बढ़ावा देती है। गरीब लोग समाज में अन्य वर्गों से अलग रहते हैं और उन्हें समान अवसर नहीं मिल पाते। यह स्थिति सामाजिक अलगाव को बढ़ावा देती जिससे समाज में संघर्ष और अशांति बढ़ती है।

4. आर्थिक विकास में रुकावट

गरीबी का प्रभाव केवल व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि यह राष्ट्रीय स्तर पर भी आर्थिक विकास को प्रभावित करता है। जब एक बड़ा वर्ग गरीबी में जी रहा होता है तो उनके पास उत्पादन और सेवाओं में योगदान करने का पर्याप्त अवसर नहीं होता जिससे देश का आर्थिक विकास प्रभावित होता है।

5. मानसिक तनाव और अवसाद

गरीबी के कारण मानसिक तनाव और अवसाद भी बढ़ते हैं। गरीब लोग अक्सर अपने जीवन की स्थिति को लेकर निराश और हताश होते हैं। उनके पास जीवन को सुधारने के लिए कोई मार्ग नहीं होता जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

गरीबी का समाधान

गरीबी को समाप्त करने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। इसके लिए सरकार, समाज और व्यक्तिगत स्तर पर प्रयासों की आवश्यकता है। निम्नलिखित कुछ समाधान हैं:

1. शिक्षा का प्रसार

शिक्षा गरीबी को समाप्त करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर बच्चे को मुफ्त और अच्छी शिक्षा प्राप्त हो। शिक्षा के माध्यम से बच्चों को कौशल विकास और रोजगार के अवसर मिलते हैं जो गरीबी के चक्र को तोड़ने में मदद करते हैं।

2. स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार

गरीबी को समाप्त करने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार आवश्यक है। गरीब लोगों को सस्ती और अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इसके साथ-साथ उचित पोषण और स्वच्छता के उपायों को भी बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोग बीमारियों से बच सकें।

3. रोजगार के अवसर पैदा करना

गरीबों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करना भी आवश्यक है। इससे उनकी आय में वृद्धि होगी और वे गरीबी की स्थिति से बाहर निकल सकेंगे। इसके लिए सरकार को छोटे उद्योगों और आत्मनिर्भर योजनाओं का समर्थन करना चाहिए।

4. कृषि क्षेत्र में सुधार

कृषि क्षेत्र में नई तकनीकों और संसाधनों का समावेश किया जाना चाहिए, ताकि किसान ज्यादा उत्पादन कर सकें और उनका जीवन स्तर सुधर सके। सरकार को कृषि क्षेत्र को आधुनिक बनाने के लिए उपयुक्त कदम उठाने चाहिए।

5. भ्रष्टाचार से निपटना

भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए कठोर कदम उठाए जाने चाहिए। सरकारी योजनाओं का सही तरीके से जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन होना चाहिए ताकि गरीबों को योजनाओं का पूरा लाभ मिल सके।

सरकारी पहल

भारत सरकार ने गरीबी कम करने के लिए कई योजनाएं और पहल शुरू की हैं। इनमें से कुछ प्रमुख पहलें निम्नलिखित हैं:

1. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना

यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी को कम करने के लिए शुरू की गई है। इसके तहत ग्रामीण इलाकों में कामकाजी अवसर प्रदान किए जाते हैं ताकि गरीबी को रोजगार मिल सके और उनका जीवन स्तर बेहतर हो सके।

2. प्रधानमंत्री आवास योजना

इस योजना का उद्देश्य गरीबों को घर मुहैया कराना है। इसके तहत शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को सस्ती दर पर घर उपलब्ध कराए जाते हैं ताकि वे बेहतर जीवन जी सकें।

3. स्वास्थ्य बीमा योजनाएं

सरकार ने आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं के तहत गरीबों को स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया है, ताकि वे महंगी स्वास्थ्य सेवाओं से बच सकें और उनका इलाज उचित रूप से हो सके।

4. प्रधानमंत्री जन धन योजना

यह योजना गरीबों को वित्तीय सेवाओं का लाभ देने के लिए शुरू की गई है। इसके तहत गरीबों के बैंक खातों को खोला जाता है, जिससे वे वित्तीय समावेशन का लाभ उठा सकते हैं और डिजिटल इंडिया के साथ जुड़के अपनी जीवन को बेहतर बना सकते है।

5. किसान सम्मान निधि योजना

यह योजना किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू की गई है। किसान इस योजना के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त करते हैं, जिसे वे अपनी कृषि कार्यों में उपयोग कर सकते हैं। इसके तहत योग्य किसानों को हर साल तीन किस्तों में 6,000 रुपये की राशि दी जाती है।

निष्कर्ष:-

भारत में गरीबी एक जटिल और गंभीर समस्या है, जिसके समाधान के लिए सशक्त एव कदम उठाने की आवश्यकता है। आज के परिपेक्ष में गरीबी एवं इससे बढ़ती असमानता एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। हालांकि सरकारी योजनाओं और पहलों के माध्यम से गरीबी को कम करने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं फिर भी यह एक निरंतर प्रक्रिया है। गरीबी को समाप्त करने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक न्याय की दिशा में प्रभावी कदम उठाने होंगे जिससे हर व्यक्ति को एक बेहतर और अच्छा जीवन जीने का अवसर मिले। भारत सरकार ने गरीबी निवारण के लिए कई योजनाएं बनाई हैं, जिनका उद्देश्य गरीबों और पिछड़े वर्गों की मदद करना है। इन योजनाओं के माध्यम से गरीबों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और अन्य बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। हालांकि, इन योजनाओं की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इन्हें सही तरीके से लागू किया जाए और इनका लाभ सही लोगों तक पहुंचे। गरीबी केवल एक आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक, मानसिक और राष्ट्रीय चुनौती है, जिसे संजीदगी से हल करने की आवश्यकता है।

एक उम्मीद



प्रमोद वर्मा

एक बार की बात है भारत के शिमला नाम के रेलवे स्टेशन पर राजीव नाम का व्यक्ति काम करता था। अपने काम में बहुत ईमानदार होने के साथ-साथ वह यात्रियों की भी मदद करता था। कोई विदेशी यहां पर आए और उसे यहां के किसी रास्ते का पता ना हो तो राजीव उनको रास्ता बताना अपनी जिम्मेदारी समझता था। एक दिन राजीव ने देखा कि एक औरत अपने छोटे बच्चे की ट्रॉली सीढ़ियों से उतार नहीं पा रही है और कोई भी इंसान उसकी मदद नहीं कर रहा है। राजीव ने अपनी कुर्सी से उठकर उसकी मदद की। राजीव का एक छोटा सा परिवार था। जिसमें उसकी पत्नी और एक बेटा सैम जो कि 16 साल का था परन्तु बेटा बहुत गुस्सैल और अपने आपे से बाहर है। वह सभी के साथ बुरा व्यवहार करता है और अक्सर कोई ना कोई मुसीबत खड़ी कर देता था। आज भी उसकी पत्नी कॉल करके कहती है कि बेटे ने कुछ करदिया लेकिन राजीव ड्यूटी टाइम पर बहुत ही स्ट्रिक्ट रहता है और पर्सनल बातें नहींकरना चाहता और कहता है ठीक है वो बाद में बात करेगा, अभी फोन रखो। फिर वो टिकट काउंटर खोलता है और वहां पर पैसेंजर्स की लाइन लग जाती है। इसी बीच नीलम नाम की एक औरत आती है और टिकट मांगती है। राजीव कहता है उसे कौन से स्टेशन का टिकट चाहिए तो नीलमकहती है पहले आप यह बताइए कि आपका चेहरा इतना उतरा हुआ क्यों है? लाइफ में कोई समस्या है क्या आपको? और वह एक सिगरेट जलाती है तो राजीव कहता है नहीं- नहीं, यहां सिगरेट पीना निषेध है। यह आपकी सेहत के लिए भी अच्छा नहीं होगा। वह तुरंत लाइटर बुझा कर कहती है - थैंक यू। मुझे नॉरमन हिल के लिए एक टिकट चाहिए। राजीव कहता है मैं यहां पर 10 सालों से काम कर रहा हूं और नॉरमन हिल का मैंने आज तक नाम नहीं सुना और अगर वो जगह है भी तो यहां से कोई ट्रेन वहां पर नहीं जाती इतना तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं। नीलम कहती है अरे क्या बात कर रहे हैं आप! मैं तो अक्सर यहीं से ट्रेन पकड़ कर जाती हूं और सीधे नॉरमन हिल उतरती हूं। राजीव भी कंफ्यूज होकर उससे पूछता है अच्छा आप एक काम कीजिए उस ट्रेन का नंबर या उसकी टाइमिंग तो बताइए कुछ। वो बड़ी तेजी से कहती है अरे नॉरमन हिल के लिए रोज तीन ट्रेनें जाती हैं। एक तो 9:10, दूसरी दोपहर 01:25 और तीसरी शाम 05:14 । राजीव कहता है नहीं मैडम इन टाइम्स पर जो ट्रेन जाती हैं वो तो कालका स्टेशन तक जाती हैं लेकिन आप जिस नॉरमन हिल की बात कर रही हैं उस नाम का तो कोई स्टेशन उस ट्रेन के रास्ते में नहीं पड़ता। फिर नीलम राजीव को अपने कंप्यूटर में चेक करने के लिए कहती है। राजीव जैसे ही अपने मॉनिटर को देखकर मुड़ता है तो नीलम वहां पर नहीं होती है। राजीव एकदम चौंक जाता है कि भाई कहां गायब हो गई एकदम से फिर काम ख़त्म होने के बाद वो इस बारे में अपने साथी रवि को बताता है। रवि कहता है अरे यार नॉरमन हिल ये नाम तो मैंने भी कभी नहीं सुना। मुझे तो लगता है कि कोई औरत आई ही नहीं और ना ही कोई गायब हुआ है। ये सब बस तुम्हारे दिमाग का भ्रम है। अरे तुम बूढ़े हो रहे हो ना तो ये तुम्हारे दिमाग का वहम हो सकता है। यह सुनकर राजीव कहता है कि उड़ा लो मेरा मजाक तुम्हें भी एक दिन बूढ़ा होना पड़ेगा। खैर कल मिलते हैं कहकर राजीव अपने घर के लिए निकल जाता है। परन्तु घर पर पुलिस बैठी होती है क्योंकि राजीव के बेटे सैम ने आज अपनी गर्लफ्रेंड को मारा था और उस लड़की ने पुलिस में शिकायत कर दी। राजीव फिर किसी तरह पुलिस से बात करके फिलहाल इस मामले को निपटा देता है और कहता है कि मैं आपसे वादा करता हूँ कि आगे से ये ऐसी हरकत कभी नहीं करेगा। पुलिस भी उसको धमकी देकर चली जाती है। राजीव अब सैम से पूछता है कि बेटा तुम्हें हर बात पर इतना गुस्सा क्यों आता है? उसका बेटा भी कहता है पापा मुझे खुद नहीं पता मुझे इतना गुस्सा क्यों आता है? सब मुझसे डरते हैं पापा। राजीव कहता है ठीक है तुम फिक्र मत करो सब कुछ ठीक हो जाएगा। अब तुम आराम करो। अगली सुबह फिर से नीलम वहां पर आकर 9:10 को नॉरमन हिल जाने वाली ट्रेन की टिकट मांगती है। इस बार राजीव उसको अंदर बुलाकर बिठा देता है और रवि को बुलाता है। नीलम फिर कल की वही बातें दोहराती है। रवि पूछता है नॉरमन हिल क्या बात कर रहे हो। किस तरह की जगह है वो? वहां कितने लोग रहते हैं? वो बताती है वहां पर 5000 लोग रहते हैं। अब राजीव पूछता है अच्छा एक बात बताइए नॉरमन हिल जाने के लिए टाइम कितना लगता है? वो बताती है लगभग 17 मिनट्स लगते हैं और वहां के इंश्योरेंस कंपनी में मैं काम भी करती हूं। परन्तु आप लोग इतने सवाल क्यों पूछ रहे हो कोई गड़बड़ है क्या? रवि फिर उसको अपना सिस्टम दिखाकर कहता है ये देखिए उस ट्रेन के रास्ते में नॉरमन

हिल नाम का कोई स्टेशन ही नहीं है फिर आप वहां पर कैसे जा सकती हैं? अब ये कहकर वो मुड़ते हैं तो वहाँ नीलम होती ही नहीं। रवि भी चौंक जाता है कि ये कहां गायब हो गई? देखा देखा यही तो मैं कल कह रहा था तुम्हें और तुम हो कि मेरा मजाक उड़ा रहे थे। शायद वो कोई जादूगरहै या फिर कोई भूत। अब राजीव बाहर निकलता है तो वहां पर कालका जाने वाली 9:10 की ट्रेन निकल रही होती है। नीलम ने इसी ट्रेन का जिक्र किया था कि यह नॉरमन हिल जाती है। राजीव को सच पता लगाने की तीव्र इच्छा होती है वो भी ट्रेन में चढ़ जाता है और नीलम को ढूंढने लग जाता है पर वो उसे नहीं मिलती। वहां पर एक पैसेंजर बैठा होता है वो राजीव से पूछता है क्या बात है सर आज टिकट चेकिंग की ड्यूटी है क्या आपकी? राजीव ना में जवाब देकर उतर जाता है और ट्रेन वहाँ से चली जाती है। राजीव अब घर आता है तो उसे पता चलता है आज तो सैम ने अपनी मां को ही मार दिया होता बड़ा खतरनाक लड़का है। राजीव भी परेशान होकर उसको एक साइकेट्रिस्ट के पास लेकर जाता है। साइकेट्रिस्ट बताती है देखिए आपके बच्चे सैम को बचपन से कोई मानसिक तनाव है, जिसकी वजह से वो हद से ज्यादा वायलेंट हो जाता है। आगे जाकर इसका गुस्सा और वायलेशन भी बढ़ सकता है इसलिए हमेशा इस पर आप नजर रखिएगा। राजीव अपने बेटे को लेकर बहुत दुखी हो जाता है क्योंकि बच्चा बार-बार ऐसी हरकतें करे जिससे बेइज्जत होना पड़े तो दुख तो होता ही है। उस रात वो अपनी पत्नी से पूछता है तुम्हें हमारी पहली मुलाकात याद है क्या? वो कहती है अरे क्यों नही! तुम स्टेशन पर काम करते थे और मैं रोज ट्रेन का टिकट लेती थी। दोनों की दोस्ती हो गई फिर मुलाकात के दो महीने के बाद ही तुमने मुझे डेट के लिए पूछा फिर क्या था शादी हुई और सैम पैदा हो गया। यही तो है हमारी लव स्टोरी का इतिहास। अब अगले दिन राजीव अपना काम ठीक से नहीं कर पाता क्योंकि घर में उसको सैम की परेशानी मन ही मन खाये जाती है तो यहां नीलम की परेशानी क्योंकि नीलम ने भी उसके दिमाग में सरदर्द करके रखा हुआ था। एक अनजान औरत जो बार-बार ऐसी जगह की बात कर रही है जो कि मैप में है ही नहीं और ऊपर से गायब भी हो जाती है। आज तो मैं सच का पता लगा कर ही रहूंगा। यह सोच कर वो 9:10 की ट्रेन में चढ़ जाता है फिर वो अपने फोन पर 17 मिनट का टाइमर सेट कर लेता है क्योंकि नीलम ने कहा था यहां से नॉरमन हिल जाने में 17 मिनट्स लगते हैं तो आज भी वही यात्री राजीव को दोबारा मिलता है और उसे पूछता है अरे आज फिर आप टिकट चेक करने आ गए क्या? राजीव कहता है नहीं आज तो मैं खुद एक यात्री हूं और वो एक खिड़की वाली सीट पर बैठकर बाहर देखने लग जाता है। उसको बाहर नीलम खड़ी दिखती है। राजीव फिर से कंफ्यूज हो जाता है कि यह औरत आखिर है कौन और यह उसे हर जगह नजर क्यों आ रही है? ट्रेन बहुत दूर जा चुकी थी लेकिन अब तक एक भी स्टेशन नहीं आया। टाइमर में भी लगभग 17 मिनट हो चुके थे लेकिन अब तक नॉरमन हिल स्टेशन का कोई पता नहीं चला। तभी राजीव को बाहर एक शहर जैसा कुछ दिखाई देता है। इतने में वो यात्री उठकर दरवाजे के पास जाता है तो दरवाजा अपने आप खुल जाता है। राजीव चौंक जाता है कि ट्रेन के चलते दरवाजा खुला कैसे? वो उस यात्री को चेतावनी देता है अरे अरे गिर जाएंगे आप पर वो यात्री तो चलती ट्रेन से नीचे कूद जाता है। राजीव की समझ में कुछ नहीं आया और उसे सदमा लगता है। अब उसका टाइमर भी जीरो पर आ चुका था तो क्या यही वो नॉरमन हिल है यह सोचकर राजीव भी ट्रेन से कूद पड़ता है और तब वो देखता है कि उस ट्रेन से कई लोग इस जगह पर कूद रहे हैं और एक पहाड़ पर चढ़कर उस शहर की ओर जा रहे हैं। राजीव भी बिना कुछ सोचे समझे उनके साथ-साथ चलने लग जाता है और उस शहर पहुंच जाता है। वहां बड़े बूढ़े, बच्चे सभी साथ-साथ होते हैं। राजीव फिर वहां के एक रेस्टरोंट में जाता है तो वेट्रेस उसका स्वागत करती है और पूछती है कि सर आप क्या लोगे? राजीव चाय मांगता है वो वेट्रेस तुरंत चाय लाकर देती है और साथ ही बताती है कि यह एप्पल केक है जो उसने खुद बनाया है। आप बताइए जरा कि कैसा है तब राजीव केक खाता है तो बिल्कुल मंत्र मुग्ध हो जाता है क्योंकि इतना टेस्टी केक उसने लाइफ में कभी नहीं खाया था। वो रेस्टरोंट से बाहर आता है तो एक कपल उससे टकरा जाते हैं। वो आदमी कहता है सॉरी सर हमारी आज इंगेजमेंट हुई है इसलिए जरा हंस खेल रहे थे। आपसे टकरा गए उसके लिए बहुत खेद है। प्लीज माफ कर दीजिए राजीव भी कहता है कोई बात नहीं आप दोनों को बधाई। वो थैंक यू कहकर चले जाते हैं। यहां के लोगों का व्यवहार राजीव का दिल जीत लेता है। यहां सब बहुत ही खुश दिखते हैं। थोड़ी दूर पर बच्चे पतंग उड़ाकर मजे से खेल रहे थे, जिसको देखकर राजीव का मन थोड़ा हल्का हो जाता है। वहां पर नीलम भी आ जाती है। राजीव पूछता है जरूर ये सब उसके दिमाग का वहम है। वास्तव में मेरी जो परेशानियां है उनसे छुटकारा पाने केलिए मेरा दिमाग मेरे साथ ही खिलवाड़ कर रहा है और मुझे विश्वास दिलाना चाहता है कि मैं इस खूबसूरत जगह पर हूं। नीलम कहती है अरे आपको कैसे

पता ये कल्पनिक है? राजीव कहता है दुनिया में ऐसी कोई जगह होती ही नहीं जहां सब खुश रहते हैं। हर किसी को कोई ना कोई दुख तो होता ही है। मैं ट्रेन में था कि अचानक लोग ट्रेन से कूदने लगे तो मैं भी कूद कर इस जगह पर पहुंच गया। अरे वास्तव में ऐसा होता है क्या? नीलम भी हंसकर कहती है यह भी तो सच है असल में 9:10 वाली वो ट्रेन आपको काल्पनिक दुनिया में लेकर आ गई है। यहां इंसान वही हैं लेकिन इस दुनिया में उनके कोई दुख नहीं हैं। सब बड़े खुश हैं और आप जिस नॉरमन हिल के बारे में बार-बार पूछ रहे थे यही वो जगह है। शाम को 5:14 को शिमला जाने वाली ट्रेन आएगी और उसमें आप वापस चले जाएंगे तो आप अपने घर पहुंच जाएंगे। वास्तव में आपके परिवार में जो दुख है वो इस दुनिया में नहीं होगा और आप अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी जी सकेंगे। राजीव की समझ में कुछ नहीं आता कि नीलम कह क्या रही है और जो वो कह रही है वो कैसे मुमकिन है फिर भी वो 5:14 तक वहीं इंतजार करता है। बाकी लोग भी उसी की तरह ट्रेन के लिए वहां पर इंतजार कर रहे होते हैं और जिस तरह चलती ट्रेन से सभी कूदे थे उसी तरह चलती ट्रेन में सब चढ़ने लग जाते हैं। आखिरकार राजीव शिमला स्टेशन पहुंच जाता है। उसे लगता है कि दुनिया में जाकर खुशी तो मिली लेकिन आज के बाद वो वहां पर नहीं जाएगा। यह निश्चय करके वह घर जाता है लेकिन यह क्या उसकी वाइफ आज कुछ ज्यादा ही खुश नजर आ रही है दिखने में बहुत खूबसूरत भी लग रही है। राजीव भी कंफ्यूज होकर अपने बेटे सैम के कमरे में जाता है लेकिन वहां सैम होता ही नहीं बल्कि वो कमरा एक स्टोररूम की तरह दिखता है। उसकी वाइफ कहती है तुम इस कमरे में क्यों आये हो? अरे याद है क्या ये कमरा हमने अपने होने वाले बच्चे के लिए तैयार किया था। लेकिन हमारी किस्मत तो देखो ना तो हमारा कोई बच्चा हुआ और ना इस कमरे को कोई यूज कर पाया। यह सुनकर राजीव को धक्का लगता है और वो चौंक जाता है कि यह क्या हुआ और कैसे हुआ। उसे लगा था कि नॉरमन हिल से वापस आने से वो काल्पनिक दुनिया से निकल कर अपनी दुनिया में वापस आ गया है लेकिन सच तो यह है कि वह अब काल्पनिक दुनिया में ही है और उसी काल्पनिक दुनिया में वो शिमला में रह रहा है। इस काल्पनिक दुनिया में उसका कोई बेटा नहीं है जो उसको परेशान करे इसलिए उसकी पत्नी भी बहुत खुश दिखाई दे रही है। खैर जो हो गया सो हो गया यह सोचकर वो अगले दिन काम पर जाता है वहां उसे फिर वही औरत दिखाई देती है जो अपने बच्चे की ट्रॉली को नीचे नहीं उतार पा रही थी लेकिन इस बार बहुत से लोग मदद के लिए आते हैं। यहां काल्पनिक दुनिया में सब अच्छे लोग होते हैं और खुशी से दूसरों की मदद कर रहे होते हैं। अब इस दुनिया में राजीव कुछ रिसर्च करता है जिसमें उसको पता चलता है कि एक न्यूजपेपर आर्टिकल में लिखा था कि नॉरमन हिल नाम का एक शहर बनने वाला था लेकिन उस प्रोजेक्ट को सरकार ने रोक दिया जिस वजह से वो शहर नहीं बन पाया। राजीव इस आर्टिकल को लिखने वाली रिपोर्टर से मिलने जाता है और उस शहर के बारे में पूछता है। रिपोर्टर बताती है मुझे उस शहर के प्रोजेक्ट के बारे में अच्छी तरह याद है वैसे आप कितनी बार वहां पर गए हैं? राजीव कहता है मैं तो एक ही बार गया हूं वो रिपोर्टर बताती है कि आपकी तरह कई लोग आकर मुझसे उस शहर के बारे में पूछते हैं और वह कहते हैं कि वह उस शहर में कई बार गए हैं फिर वह राजीव को कुछ कागजात दिखाती है और बताती है नॉरमन हिल एक बहुत बड़े आर्किटेक्ट का सपना था। वह एक शानदार शहर को बनाना चाहता था लेकिन किसी वजह से उसका प्रोजेक्ट पास नहीं हुआ औरअपने ड्रीम प्रोजेक्ट को रोकते देखकर वह बर्दाश्त नहीं कर पाया और बेचारा चल बसा। फिलहाल वह तो एकदम खाली जगह है पर हां कुछलोग कहते हैं कि वहां पर सच में एक शहर है जहां पर हर कोई बहुत ही खुश है और सभी चैन से रहते हैं। उनकी बातें सुनकर मैंने भी कई बार नॉरमन हिल जाने का ट्राई किया लेकिन ना जाने क्यों उस जगह पर मेरे लिए ट्रेन का दरवाजा ही नहीं खुलता है। इसलिए मैं वहां पर जा ही नहीं पाई लोग कहते हैं कि सिर्फ कुछ ही लोगों को नॉरमन हिल जाने का मौका मिलता है। फिर उन कागजात में राजीव को नीलम की फोटो मिलती है वो रिपोर्टर से पूछता है तो वो बताती है कि ये उस आर्किटेक्ट की बेटी है जो शहर बनाना चाहता था। बेचारी बहुत दुखी थी। उस समय अगर उसके पापा का ड्रीम प्रोजेक्ट पास हो जाता तो शायद वो इस वक्त जिंदा होते लेकिन वो लड़की भी पता नहीं अचानक कहां गायब हो गई। राजीव को अब और ज्यादा जिज्ञासा होने लग जाती है कि रहस्य के अंदर और भी रहस्य खुलते जा रहे थे। इसके पीछे का राज क्या है फिर?

राजीव काम के टाइम पर भी पुराने न्यूजपेपर्स देख रहा होता है इतने में रवि आ जाता है और कहता है कि आज मुझे जल्दी जाना है। मेरा बेटा स्कूल ड्रामा में हिस्सा ले रहा है। राजीव हंसता है और कहता है कि तेरी शादी हो गई क्या जो तेरा बेटा हो गया। रवि कहता है यार मजाक मत कर मुझे देरी हो रही है और मेरे तीन बच्चे हैं। पर किस्मत का खेल तो देखो मेरे तीन हैं और तुम्हारा एक भी

नहीं। असल में काल्पनिक दुनिया में चार्ल्स के तीन बच्चे हैं और राजीव की कोई संतान ही नहीं है। राजीव को अपने बेटे की याद आती है और वह तुरंत ट्रेन के पास जाता है जहां उसे एक लड़का दिखाई देता है जो उसके बेटे सैम की उम्र का था। अब वो फैसला कर लेता है कि इस काल्पनिक दुनिया में खुशी जरूर है। लेकिन उसे उसका बेटा चाहिए चाहे वो उससे कितने ही दुख क्यों ना दे। मुझे अपना बेटा चाहिए यह फैसला करके वो ट्रेन में चढ़ जाता है ठीक 17 मिनट के बाद दरवाजा अपने आप खुलता हैऔर राजीव नीचे कूद पड़ता है वो उसी रेस्टोरेंट में जाता है जहां पर वही वेट्रेस फिर से एपल केक राजीव को टेस्ट करने के लिए देती है और राजीव मजे से खाकर बाहर आता है तो वही यंग कपल उसे फिर से टकरा जाते हैं और इस बार भी वह बताते हैं कि हमारी नई-नई इंगेजमेंट हुई है। खेल-खेल में हम आपसे टकरा गए, सॉरी सर। राजीव फिर बधाई देता है तो वो थैंक यू कह कर चले चले जाते हैं। राजीव समझ नहीं पाता कि पिछली बार उसके साथ यही सब हुआ था और आज भी वही हो रहा है। कंफ्यूजन में वो एक जगह पर बैठ जाता है। एक कपल को अपने बेटे के साथ देखकर राजीव को अपने बेटे सैम की याद फिर आ जाती है। वो नीलम को ढूंढता है पर वो कहीं नहीं दिखाई देती। राजीव भी परेशान होकर वापस ट्रेन में चढ़ जाता है और शिमला पहुंच जाता है। पर अब भी वो काल्पनिक दुनिया में ही रह रहा है। उस रात अचानक दूसरे कमरे से आवाजें आती हैं। लेकिन वहां पर कोई नहीं होता फिर वो अटारी की ओर चढ़ता है तो लगता है जैसे ग्रेविटी रिवर्स हो गई हो। वो एक व्हाइट कलर के कमरे में पहुंचता है जहां पर एक पुराना टीवी और एक वीडियो कैसेट प्लेयर होता है उसमें एक कैसेट होता है जिसे राजीव प्ले करता है। उसमें सैम की बचपन की वीडियो होती हैं। राजीव बहुत दुखी होता है और वह किसी भी तरह बस अपने बेटे को वापस पाना चाहता है। अगले दिन वो फिर उस ट्रेन में नॉरमन हिल पहुंच जाता है। वहां वो हर किसी से नीलम के बारे में पूछता है लेकिन राजीव अब महसूस करता है कि यहां के सारे लोग अपनी वास्तविकता में किसी ना किसी दुख, दर्द या बीमारी से पीड़ित हैं और उससे राहत पाने के लिए ये लोग इस नॉरमन हिल पर आते हैं। एक आदमी तो कहता है मैं तो किसी नीलम को नहीं जानता। मैं यहां पर बहुत खुश हूं सर आप भी नीलम को ढूंढना बंद कर दीजिए और हर पल को खुशी से जीए। तब वो औरत आती है जिसके बच्चे को स्टेशन की सीढ़ियों से उतारने में राजीव अक्सर मदद करता था। वो रोते हुए कहती है सर मेरे बच्चे के गले में कुछ अटक गया है। वो सांस नहीं ले पा रहा है। शायद इसकी जान को खतरा है। प्लीज मेरी मदद कीजिए पर राजीव उसको इग्नोर करके रेस्टोरेंट में जाता है और वेट्रेस से नीलम के बारे में पूछता है पर वो कहां वो तो अपना दुख सुनाने लग जाती है कि जब मैं 16 साल की थी तो एक आदमी ने मुझे चाकू दिखाकर मुझे एब्यूज किया उस दिन मुझे कितना दर्द हुआ होगा आप सोच सोच भी नहीं सकते। अब राजीव सोच में पड़ जाता है कि यहां पर तो हर इंसान कोई ना कोई दुख झेल ही चुका है। राजीव अब और परेशान हो जाता है और उसे गुस्सा भी आ रहा था। अब वो बाहर आता है तो फिर से वो कपल टकराते हैं वो फिर सॉरी कहते हैं लेकिन इस बार राजीव जो गुस्से में था उस आदमी को धक्का दे देता है पर फिर भी वो उठकर खुशी से राजीव को थैंक करके निकल जाता है और तब राजीव को एक बात याद आती है कि उस दिन नीलम ने कहा था कि वो नॉरमन हिल में एक इंश्योरेंस कंपनी में काम करती है। राजीव तुरंत उस कंपनी को ढूंढता है लेकिन वहां बिल्डिंग के बजाय एक दीवार होती है जिसमें एक दरवाजा होता है। राजीव दरवाजा खोलकर अंदर जाता है तो दूसरी ओर निकलने की बजाय वह एक बहुत बड़े स्पेस के अंदर जाता है जहां नीलम होती है। राजीव कहता है प्लीज मुझे इस काल्पनिक दुनिया में नहीं जीना। मुझे प्लीज मेरी असली दुनिया में वापस भेज दीजिए। नीलम कहती है लेकिन काल्पनिक दुनिया में आप ज्यादा खुश रह पाएंगे। राजीव कहता है आपने सुना नहीं मैंने क्या कहा। मुझे नहीं चाहिए ये नकली दुनिया। मुझे नहीं चाहिए नकली खुशी। मुझे अपनी दुनिया में जाना है बस और कुछ नहीं। फिर चाहे वहां दुख हो दर्द हो या मौत ही क्यों ना आ जाए। मुझे उसकी चिंता नहीं है मुझे बस अपने बेटे और अपनी पत्नी के साथ रहना है समझी तुम और इसके बाद नीलम दीवार में घुस जाती है। राजीव की कुछ समझ में नहीं आता कि क्या हो रहा है वह भी उसके पीछे दीवार में घुस जाता है और फिर राजीव और नीलम उस दीवार से बाहर आ जाते हैं और तब नीलम राजीव को बताती है असल में इस नॉरमन हिल शहर को उसके पिता बनाना चाहते थे लेकिन नहीं बना पाए उसी दुख में वो मर गए। उस दुख को भूलाने के लिए नीलम ने एक ऐसा शहर बनाया जहां पर टेक्नोलॉजी इतनी एडवांसड है कि यहाँ पर वो लोग भी खुश रह सकते हैं जो असली दुनिया के दुख दर्द से परेशान हैं। नॉरमन हिल में अलग-अलग दुनिया से लोग आ सकते हैं लेकिन यहां पर सिर्फ उन इंसानों को आने का मौका दिया जाता है जो अपनी दुनिया में बहुत ही पीड़ित हुए हैं। वो लोग जो अपनी दुनिया में नहीं रहना

चाहते सिर्फ उन्हीं के लिए ट्रेन का दरवाजा खुलता है। वो रिपोर्टर इसलिए यहां पर नहीं आ पाई क्योंकि वो अपनी दुनिया में बहुत खुश थी। मतलब जो लोग पहले से खुश हैं वो नॉरमन हिल नहीं आ सकते। दुखी लोग जब ट्रेन मेंचढ़ते हैं तो नॉरमन हिल आते हैं और शाम को अपने घर लौटते हैं तो उनकी लाइफ में वह पहले वाला दुख दर्द कुछ नहीं होता और वह काल्पनिक दुनिया में खुश रहने लग जाते हैं। असल में वो औरत जिसके बच्चे की तुमने और दूसरों ने मदद की थी उसका बच्चा मुंह में कुछ खा रहा था शायद वही उसके गले में अटक गया और वो चल बसा। इस बात से वो औरत टूट गई और नॉरमन हिल आ गई । जहां पर उसका बेटा भी जिंदा था जब वो वापस जाएगी तो काल्पनिक दुनिया में होगी, जिसमें उसका बच्चा ठीक-ठाक होगा और यह सब कुछ बता करके नीलम कहती है कि आपकी लाइफ में बहुत दुख था। आपका बेटा आए दिन कोई ना कोई मुसीबत खड़ी कर देता था और आप बहुत परेशान रहते थे इसलिए नॉरमन हिल का दरवाजा आपके लिए खुल गया। अगर आप इसी काल्पनिक दुनिया में रहोगे तो आपकी लाइफ आराम से कट जाएगी लेकिन वो लाख समझा ले पर राजीव गुस्से में कहता है कि मुझे मेरा बच्चा चाहिए। वो अच्छा हो या बुरा मुझे खुशी देता हो या दुख वो मेरी प्रॉब्लम है। उसे मैं हैंडल कर लूंगा तुम कौन होती हो जबरदस्ती मुझे काल्पनिक दुनिया में फंसाकर मेरे बेटे को मुझसे दूर करने वाली। इस पर नीलम कहती है अगर आप अपनी दुनिया में गए तो आपके बेटे की वजह से बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ने वाले हैं। आप उस खतरनाक सच का सामना नहीं कर पाएंगे। आपने सुना होगा कि आपकी दुनिया में कुछ लोग अचानक लापता हो जाते हैं क्या आप जानते हैं वह कहां जाते हैं? मैं बताती हूं कहां जाते हैं वो लोग अपने दुख दर्द से छुटकारा पाने के लिए इस काल्पनिक दुनिया में चले जाते हैं। आपको भी इस खुशी से भरी काल्पनिक दुनिया में रहने का मौका मिल रहा है। इसे मत गँवाइए। आप चाहें तो यहाँ एक बच्चे को गोद ले सकते हैं। जो आपकी हर बात मानेगा लेकिन राजीव को उसकी कोई भी बात कन्वेंस नहीं कर पाती। वह जिद करता है कि मुझे अपनी असली दुनिया में जाना है तो जाना है बस। नीलम कहती है ठीक है मुझसे जितना हो पाया मैंने आपको सचेत कर दिया। लेकिन आप दुखी जिन्दगी चाहते हैं तो मैं क्या कर सकती हूं? शाम की ट्रेन से जब आप वापस लौटोगे तो अपनी असली दुःख वाली दुनिया में होंगे कहकर वह चली जाती है। अब राजीव शाम को 5:14 वाली ट्रेन में चढ़ता है और अपनी असली दुनिया में वापस आ जाता है। वो खुशी खुशी अपने घर के लिए स्टेशन से निकलता है लेकिन वह देखता है कि उसके घर के बाहर काफी भीड़ इकट्ठी हो रही है और उसके घर का दरवाजा खुला हुआ है। आस पास से पता चलता है कि उसके बेटे ने गुस्से में उसकी पत्नी पर जोर से हमला किया और उसके सर पर चोट लगने की वजह से वो अस्पताल में आखरी साँसे ले रही है और उसके बेटे को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। यह सुनते ही वो अस्पताल की ओर भागता है और देखता है कि उसकी पत्नी मर चुकी है और उसके बेटे सैम को अपनी माँ को जान से मारने के जुर्म में आजीवन कारावास की सजा हो गयी। जिस परिवार के लिए राजीव काल्पनिक दुनिया से वापस आया था। अब उस परिवार में केवल वो अकेला ही बचा था।

अब राजीव हर दिन स्टेशन जाता है और इसी उम्मीद से टिकट काट रहा है कि किसी दिन नीलम उससे नॉरमन हिल का टिकट मांगेगी और वो उसके साथ काल्पनिक दुनिया में चला जाए जहां वो अपनी पत्नी के साथ खुश रह पायेगा बस यही उसकी एक आखरी उम्मीद है ।

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता
इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती
- सुभाषचंद्र बोस

कार्यालयीन गतिविधियाँ









कार्यालयीन गतिविधियाँ









कार्यालयीन गतिविधियाँ









कार्यालयीन गतिविधियाँ

"अंकुर" पत्रिका लोकार्पण





कार्यालयीन गतिविधियाँ





कार्यालयीन गतिविधियाँ



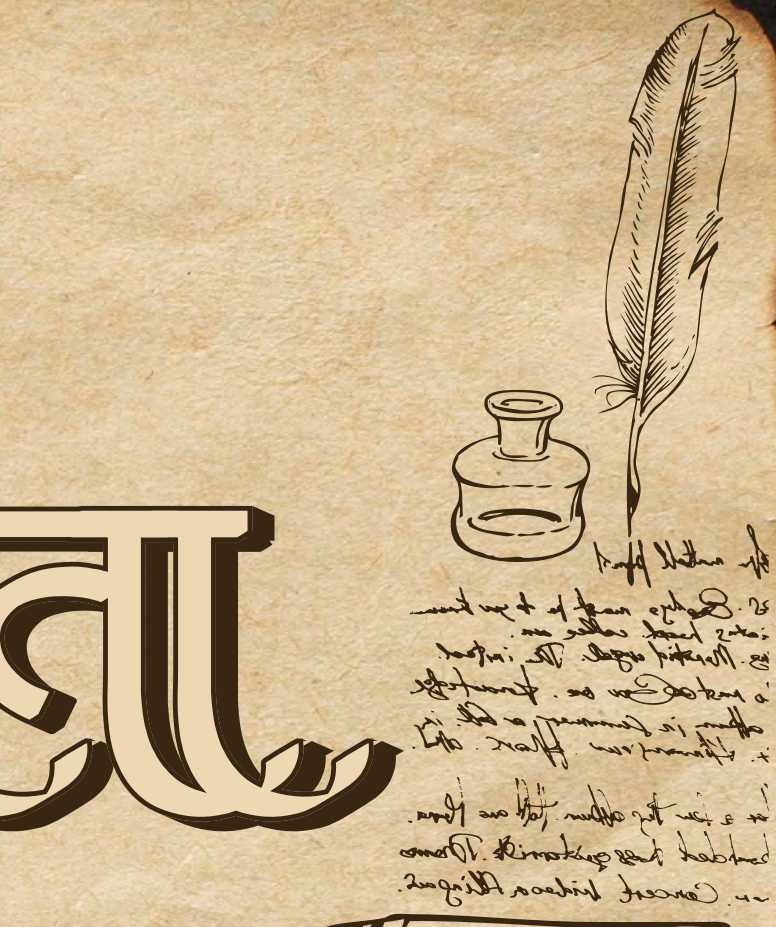


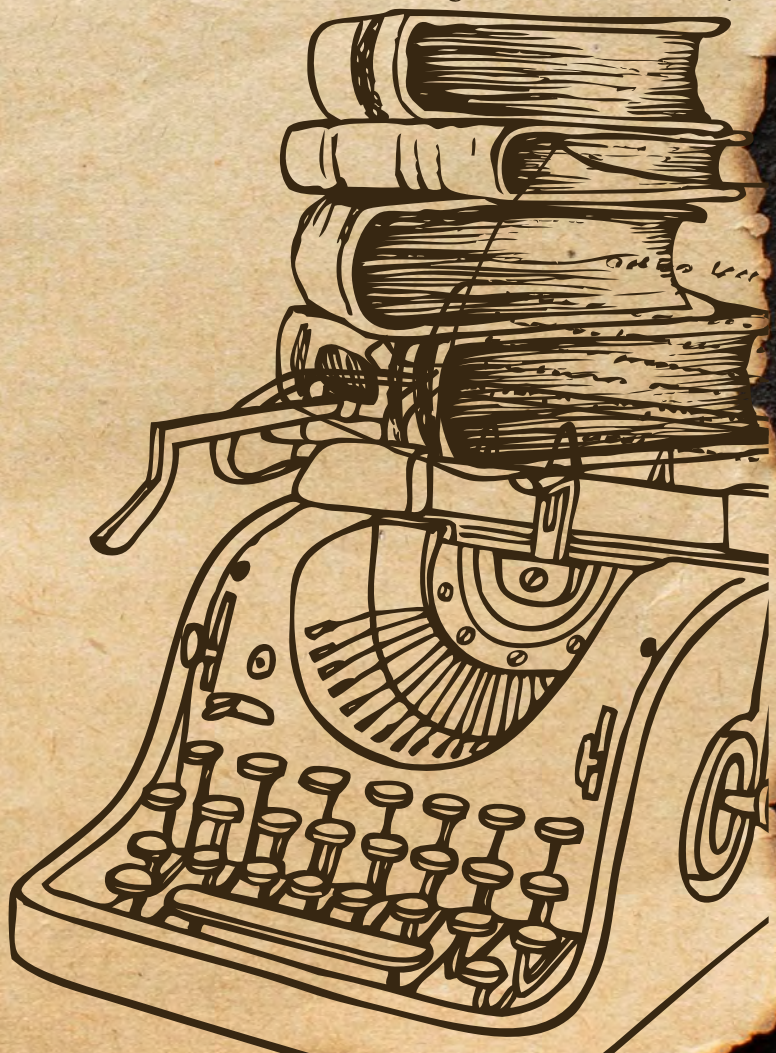
कार्यालयीन गतिविधियाँ





कविता





जिंदगी



अंकित कुमार

पता नहीं जिंदगी कब मंद आंच पर
रखी हुई हांडी की तरह उबलने लगी,
पक रही है हर रोज धीरे धीरे
खेलती है हमारे संयम के साथ
बहुत ही बारीकी से कि जिसके
आगे बड़े से बड़ा सूरमा घुटने टेक दे।

दीवाली आ रही है, त्योहार खुशियों
के प्रतीक होते हैं, मगर सबके लिए नहीं।
बचपन के दिनों की रंगत कुछ और थी,
अब रंग धूसर हो चुके हैं और हम
उबलते हुए मन से देखते हैं घनी अंधेरी
रात में कोरे आसमान की तरफ
जो दिखता है हमें कहीं न कहीं ठीक हम जैसा
बाहर से एकदम शांत और जब बरसता है
तो भूल जाता है अपनी सारी हदें।

वो सब सुहानी यादें एकाएक गले
में सांस लेने के मध्य घने दबाव
के साथ कहीं फंसी हुई सी लगती हैं
और जी करता है उस घने अंधेरे आसमान में
विलीन होके तारा बनने का और फिर
टूटकर किसी की मुराद पूरी करने का।

आखिर किसी की एक इच्छा ही सही
मगर पूरी करने में ऐसा जीवन
खर्च हो भी जाए तो क्या हर्ज है।

समर्पण का असली भाव भी तो इसी में निहित है
कि दूसरे के लिए खुद को लूटा दिया जाए।



उम्र के साथ साथ सबकुछ बिखरा हुआ
सा एकदम सामने आ जाता है,
कुछ आंसू इसी बीच गोद में छटपटाते हैं
और उंगलियां तब तक उनको पोंछने
की हिम्मत नहीं जुटा पाती जब तक
आंसू एक तालाब का रूप लेकर
अधूरे सपने लिए आंखों में तैरने ना लगे।

जब मन छटपटाता है तो अक्सर
अंधेरा सबसे करीबी दोस्त नजर आता है,
ऐसा लगता है अंधेरे को झूठा बदनाम कर रखा है।

इतनी सुकून देने वाली चीज
आखिर बुराई का प्रतीक कैसे हो सकती है?
दीवाली पर जगमगाने वाले शाही रंगों से
कहीं ज्यादा रंगत नजर आती है अंधेरे में।

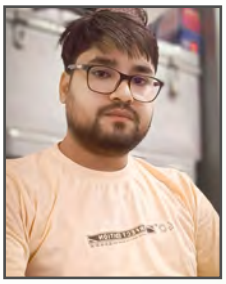
माना हंसता हुआ चेहरा सबको अच्छा लगता है
लेकिन मायूस चीजों की बात ही कुछ और है।
हंसी क्षणभंगुर है, मायूसी जरा देर तक साथ देती है।

मुझे लगता है कुछ विशेष दर्जे के लोग ही
मायूस चीजों की तरफ़ खींचे आते हैं।
और ये चीजें **दोस्तोएवस्की, अल्बर्ट कामू**
और काफ्का को पढ़कर बेहतर समझ आती हैं।

यकीनन अंधेरे से डरने वाले किसी खास तबके ने
फैलाया होगा ये भ्रम कि अंधेरा बुरी चीज है।

कहीं अब जो कोई मिलेगा मुझे मेरे जैसा
तो जरूर ये सवाल पूछूंगा उससे
कि तुम्हें भी नजर आती है क्या
कोई बुराई अंधेरे में?

माँ



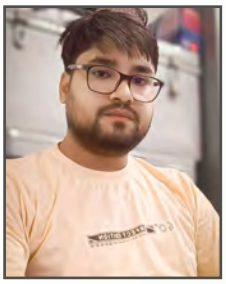
संजय मीना

मेरी माँ प्यार की जो मिसाल है
हर आशीर्वाद का ख्याल है माँ
हृदय में बसी अनकही बातें
जीवन की सबसे बड़ी ढाल है माँ
संस्कारों की सौगात है माँ
सपनों का निरंतर साथ है माँ
जीवन का वो सहारा है
कभी ना हारने का राज़ है माँ
साहस का स्रोत है माँ
दुनिया का सबसे मजबूत जोड़ है माँ
हर कठिनाई में जो साथ हो
वो अडिग विश्वास है माँ
असीमित दया का रूप है माँ
प्रेम का हर आयाम है माँ
दुनिया की सबसे प्यारी धरोहर
हर सुख का आधार है माँ
सपनों को पंख देती है माँ
हर दर्द में सुख भर देती है माँ
दुआओं में हर आशीर्वाद है
आत्मा की वो गहरी आवाज़ है माँ
हर मोड़ पर जो राह दिखाए
हर भय को जो दूर भगा दे
वो शक्ति वो अडिग विश्वास है माँ
मेरे जीवन का सबसे बड़ा राज है माँ

साहस और शांति का वह रूप है माँ
धैर्य का जो अनमोल रूप है माँ
प्रेम में बसी वो भावना
जो समंदर से भी गहरी और विशाल है माँ
सृष्टि का सबसे बड़ा काव्य है माँ
कभी ना थमने वाली लोरी है माँ
वो सृजनकर्ता वो पिघलता प्यार
जिससे पूरी दुनिया चलती है वही प्यार है माँ
विश्वास के उस आकाश में बसी
मेरे जीवन की सबसे प्यारी रेखा है माँ
जितनी बार दुनिया के अंधेरो में खोया
अंधेरो में राह दिखाए वो प्रकाश है मेरी माँ।



मेरा गाँव



संजय मीना

मेरे गाँव की ज़िंदगी कुछ खास है
यहाँ हर दिल में एक मिठास है
मिट्टी की सौंधी खुशबू में बसी
वो बचपन, वो सरलता, वो प्यारी यादें अनमोल हैं।
गाँव के खेतों में धूप छाँव का खेल
बैल और बकरियाँ बनते थे हमारे साथी
आंगन में बसी वो छोटी-छोटी खुशियाँ
जहाँ पिताजी की डांट से दिन शुरू और
माँ की लोरी से रात खत्म हो जाती थी।
गाँव की गलियों में बिछती थी धूल
हम बच्चे थे जो हर रोज़ खेलते थे बड़ों से दूर
लट्टू गुलेल और कंचे की लड़ाइयाँ
वो पुराने खेल जिनमें थी अनगिनत सफर की यात्राएँ
खेतों में काम करते थे हम सभी
माँ और पापा के साथ छोटे-छोटे हाथ थे।
धान की फसल गेहूँ की गाड़ी
वो सुबह-सुबह खेतों में जाने की सादी आदतें
गाँव की ज़िंदगी थी बड़ी सादी
मगर उसमें बसी थी अपार ताजगी
नदियों के किनारे बैठकर मिलकर बातें करना
वो मिलनसार लोग जिनकी बातें बिना कहे भी समझ आती थीं
गाँव में छांव से आती थी ठंडी हवा
दूर-दूर तक हरी-भरी ज़मीन और रंगीन चाँद की रौशनी
कभी चूल्हे पर रोटियाँ सेकते थे
कभी बड़ों के पास बैठकर शाम की कहानियाँ सुनते थे।
रात को चाँद की रोशनी में बत्तियाँ जलाना
गाँव के चौपाल पर बड़ों से ज्ञान पाना
वो दिन थे जब फोन नहीं थे
लेकिन दिलों में जुड़े रिश्ते थे।
बचपन के वो खेल, वो गाँव के छोटे-छोटे जश्न
हर एक खुशी में हम सभी एक थे
गाँव की ज़िंदगी में बहुत सादगी थी
मगर हर दिल में एक गहरी सच्ची बयानी थी।
अब समय बदल गया गाँव की ज़िंदगी भी बदल गई
मगर उन पुरानी यादों की खुशबू कभी नहीं गई।
गाँव का वो रहन-सहन वो ज़िंदगी
हमेशा दिलों में बसी रहेगी
यही है हमारा अतीत यही है हमारा जीवन।



घर का कोना



जीशान खान

ना पैसा, ना शौहरत, ना ओहदा चाहिए,
मुझे मेरे घर का एक छोटा सा कोना चाहिए।
आबाद बस्तियों में रहकर भी मुसाफिर हूं,
करे जो मेरे सफर को मुकम्मल ऐसी मंजिल चाहिए।
बेसुकून होकर बैठे हैं घर छोड़कर,
जाने क्या मिला इस सफर से, सोच रहे हैं माथा पकड़ कर,
तोते ने कैद किया खुद को पिजरें में,
अब कहता है उसे खुली हवा में आजादी चाहिए।
छोटी-छोटी बातों पर लड़ना पसंद नहीं करता,
कम से कम बात तो बड़ी होनी चाहिए।
मिल जाए दुनिया से फितरत हमारी,
इतनी तो दुनिया में कमी रहनी चाहिए।
ताकत की तमन्ना है नहीं मुझको,
अगर वो मिले तो बेशुमार होनी चाहिए।
बड़ी तसल्ली से तराशा है खुद को,
उतना ही आजमाया है हुनर को,
मोड़ दे रास्ता अंधेरों का,
इतनी तो पढ़ाई में चमक होनी चाहिए।
रेशम को छोड़ मुझे फर्श का बिछौना चाहिए,
मुझे मेरे घर का छोटा सा कोना चाहिए।



वो दिन



मनीष कुमार

हरे-भरे उस गाँव में
पीपल की ठंडी छाँव में
नीम के पेड़ नीचे
आती थी मैं तेरे पीछे-पीछे
वो बाग के बीच बगीचा
और बगीचे बीच कुआँ
वो फूलों बीच फूलों सी
उड़ती तितलियाँ
प्रीतम मेरे
वो नदी का किनारा
प्यार भरी प्यारी सिसकियाँ
तेरी मेरी दूरियाँ
और वो हिचकियाँ
याद है वह दिन बारिश का
तुम मेरे घर आए थे
और उपहार के तौर पे
नीम की दातुन लाए थे
और अब ना नीम
मगर कितनी कड़वाहट
प्रीतम मेरे
बचा लो मुझे
हो रही है घबराहट
जब मैं तेरे घर आई थी
देर लगी मगर मैंने रोटी बाजरे की खिलाई थी,
धुआं बहुत था चुल्हे पर बनाई थी
धुएं का जो अहसास था
उसमें भी आंखों का अभ्यास था
अब जल्दी पकती है रोटियां
नकली सी कोई आग लगी है नीचे-नीचे
अजनबी- सा शहर
बेजान- से लोग
यह तेरी जान मेरी जान
बेजान हो रही है
बचा लो मुझे
हम कहाँ आ गए
कैसी बेरुखी सी हवा
कैसे बेमौसमी बादल छा गए।
अगर फिर अपना याराना हो
तो वो चिट्ठियों का जमाना हो
हिचकियों का आना-जाना हो
धुंआ हो हल्का-हल्का
प्रेम का चढ़ा हो तवा
चुल्हे का परोसा खाना हो,
तेरे बनाए घर में बिछ जाए कालीन-गलीचे...



राजभाषा विशेष

*हिंदी मूल टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता में निम्न कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया:-

क्र. सं.	नाम व पदनाम	नकद पुरस्कार
1	श्री बृजपाल उपाध्याय, वरिष्ठ लेखाकार	5000/-
2	श्री दिनेश्वर कुमार दुबे, सहायक पर्यवेक्षक	5000/-
3	श्री जीशान खान, लेखाकार	3000/-
4	श्री लक्की वर्मा, वरिष्ठ लेखाकार	3000/-
5	श्री दलबीर सिंह डी. ई. ओ.	3000/-
6	श्री रिंकू कश्यप, सहायक पर्यवेक्षक	2000/-
7	श्री अजमेर सिंह, लेखाकार	2000/-
	कुल राशि	**23,000/-**

*इस छमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दो बैठकें आयोजित की गई।









*इस छमाही के दौरान हिंदी पखवाड़े का भी आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका परिणाम/पुरस्कार नीचे दर्शाये गए हैं।

क्र. सं.	प्रतियोगिता	नाम एवं पदनाम (श्री/सुश्री)	पुरस्कार	राशि
1	हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता	जिशान खान, लेखाकार	प्रथम	2500/-
		गणेश मीना, सहायक लेखा अधिकारी	द्वितीय	2000/-
		अन्नु अहलावत, सहायक लेखा अधिकारी	तृतीय	1500/-
2	हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता	प्रमोद वर्मा, लेखाकार	प्रथम	2500/-
		जिशान खान, लेखाकार	द्वितीय	2000/-
		राहुल वर्मा, सहायक लेखा अधिकारी	तृतीय	1500/-
3	हिंदी कविता पाठ (स्वरचित)	राजीव मेहता, पर्यवेक्षक	प्रथम	2500/-
		विवेक मिश्रा, लेखाकार	द्वितीय	2000/-
		सौरभ रंजन, सहायक लेखा अधिकारी	तृतीय	1500/-
4	आशु भाषण प्रतियोगिता	शीना, सहायक लेखा अधिकारी	प्रथम	2500/-
		अन्नु अहलावत, सहायक लेखा अधिकारी	द्वितीय	2000/-
		सौरभ रंजन, सहायक लेखा अधिकारी	तृतीय	1500/-
5	बाल चित्रकला प्रतियोगिता	**ग्रुप-ए:** जियांशी	**ग्रुप-बी:** स्वस्ति	प्रथम
		कृष्णा	सृष्टि	द्वितीय
		गुणिका	शिवांश	तृतीय

***उपर्युक्त पुरस्कार हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में महालेखाकार महोदय द्वारा दिए गए।**









कार्यालय समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियाँ

- ए. जी. पंजाब की हॉकी टीम के खिलाड़ियों श्री जगरूप सिंह, श्री यादविंदर सिंह, श्री पवन बस्सी, मुकुल भार्गव, परविंदर सिंह, चनदीप सिंह एवं ध्यान सिंह ने दिनांक 13.04.2024 से 19.04.2024 तक चंडीगढ़ में आयोजित होने वाली सीनियर पुरुष स्टेट हॉकी चैंपियनशिप 2024 में भाग लिया।
- श्री रतिंदर सिंह बराड़ हॉकी खिलाड़ी ने दिनांक 13.04.2024 से 19.04.2024 तक शासकीय स्तर सीनियर पुरुष एवं महिला स्टेट हॉकी चैंपियनशिप चंडीगढ़ में भाग लिया।
- श्री अर्पित सिंह एवं श्री अंकित कौशिक क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 26.06.2024 से 04.07.2024 तक यू. टी. सी. ए. सीनियर पुरुष इंटर जोनल मैचों में भाग लिया।
- दिनांक 11.06.2024 को श्रीमती प्रतीक कौर, स. ले. अ. ने कार्यालय की सभी महिला कर्मचारियों एवं अधिकारियों को यौन उत्पीड़न के बारे में जागरूक किया।
- दिनांक 21.06.2024 को कार्यालय में योग दिवस मनाया गया, जिसमें कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।
- श्री कशिश, लेखाकार एवं सुश्री नीला वल्लूवन, लेखाकार बैडमिंटन खिलाड़ियों ने दिनांक 08.07.2024 से 14.07.2024 तक पुणे (महाराष्ट्र) में आयोजित अखिल भारतीय सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लिया।
- श्री रनदीप सिंह, व. ले. एवं श्री विशाल शर्मा, लेखाकार फुटबॉल खिलाड़ियों ने दिनांक 27.07.2024 से 02.08.2024 तक कोलकाता में चयन परीक्षण सह कोचिंग शिविर में तथा दिनांक 03.08.2024 से 10.08.2024 तक कोलकाता में AIPSSB फुटबॉल टूर्नामेंट में भाग लिया।
- कार्यालय में दिनांक 19.07.2024 को फायर स्टेशन, सेक्टर 17, चंडीगढ़ के सहयोग से मॉक ड्रिल कारवाई गई।
- सुश्री नीला वी., बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 05.08.2024 से 08.08.2024 तक दिल्ली में लुडलो कैसल इंडोर बैडमिंटन हॉल में सी.ए.जी. की बैडमिंटन टीम के चयन ट्रायल में भाग लिया।
- कार्यालय के प्रांगण में दिनांक 15.08.2024 को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया, जिसमें ध्वजारोहण मुख्य मेहमान श्री के. एस. रामुवालिया, प्रधान निदेशक द्वारा किया गया, तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं जलपान का आयोजन भी किया गया।
- सुश्री नीला वी. बैडमिंटन खिलाड़ी को दिनांक 23.08.2024 से 04.09.2024 तथा 05.09.2024 से 08.09.2024 तक कैंप तथा सेंट्रल ज़ोन बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए रिलीव किया गया।
- कार्यालय की गिद्दा टीम ने दिनांक 28.08.2024 को सी.जी.ई.डब्ल्यू.सी. कमेटी द्वारा आयोजित झंकार 2024 के लिए अपना पहला ऑडिशन दिया।
- श्री गगनदीप सिंगला, स. ले. अ. को दिनांक 10.08.2024 से 13.08.2024 तक भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन के साथ पंजीकृत ट्रैक द हिमालयाज ऑर्गेनाइजेशन ट्रैक टू भृंगु लेक में भाग लेने की अनुमति प्रदान की।
- इस कार्यालय की महिला गिद्दा टीम ने दिनांक 25.09.2024 को झंकार-2024 में भाग लिया, जिसका आयोजन CGEWCC द्वारा करवाया गया।
- श्री कशिश, बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 04.09.2024 से 08.09.2024 तक चंडीगढ़ में आयोजित उत्तर क्षेत्रीय अंतरराज्यीय बैडमिंटन चैंपियनशिप में भाग लिया।
- इस कार्यालय के हॉकी खिलाड़ी श्री चनदीप सिंह एवं श्री पवन बस्सी ने दिनांक 23.09.2024 से 03.10.2024 तक चंडीगढ़ में आयोजित चौदहवीं हॉकी इंडिया सब-जूनियर पुरुष राष्ट्रीय चैंपियनशिप में भाग लिया।
- श्री परविंदर सिंह, हॉकी खिलाड़ी ने दिनांक 17.08.2024 से 13.09.2024 तक CAG हॉकी टीम में दिल्ली व पुणे में क्रमशः चयन सह कोचिंग कैम्प तथा सीनियर पुरुष अंतर विभागीय राष्ट्रीय चैंपियनशिप 2024 में भाग लिया।

अधिकारियों/कर्मचारियों की नियुक्ति एवं पदोन्नति

(01-04-2024 से 30-09-2024)

क्र. सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	पदोन्नति	तिथि	टिप्पणी
1	हरिन्द्र कुमार	पर्यवेक्षक	03-06-2024	--
2	राजेश बहल	पर्यवेक्षक	01-07-2024	--
3	बलबीर चंद	पर्यवेक्षक	01-08-2024	–
4	संगीता कांधारी	पर्यवेक्षक	18-03-2024	--
5	हरप्रीत सिंह	स.पर्यवेक्षक	01-04-2024	--
6	सौदागर सिंह	स.पर्यवेक्षक	01-04-2024	–
7	दीपक	स.पर्यवेक्षक	01-04-2024	--
8	कुलवंत सिंह	स.पर्यवेक्षक	01-05-2024	--
9	अमरीक सिंह	स.पर्यवेक्षक	03-06-2024	–
10	योगेश शर्मा	स.पर्यवेक्षक	03-06-2024	--
11	सिंदर देवी	स.पर्यवेक्षक	01-07-2024	--
12	संजु	स.पर्यवेक्षक	01-07-2024	–
13	नवीन	डी.ई.ओ.	21-08-2024	--
14	वीरेंद्र सिंह शेखावत	व.ले.अ.	03-06-2024	--
15	शरद गुप्ता	व.ले.अ.	01-07-2024	–
16	देवेंद्र सिंह	व.ले.अ.	03-06-2024	--
17	रंजीत कुमार	व.ले.अ.	01-07-2024	--
18	सुमित कुमार	व.ले.अ.	01-07-2024	–
19	रवींद्र कुमार	व.ले.अ.	01-07-2024	–

हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है
- महात्मा गांधी

अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति

(01-04-2024 से 30-09-2024)

क्र. सं.	सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि	टिप्पणी
1	राम पाल, सहायक पर्यवेक्षक	30-04-2024	--
2	भूपाल सिंह, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31-05-2024	--
3	इंदु चोपड़ा, पर्यवेक्षक	31-05-2024	--
4	अमरजीत सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	31-05-2024	--
5	तिलक राज, पर्यवेक्षक	30-06-2024	--
6	नीरा गोयल, सहायक पर्यवेक्षक	30-06-2024	--
7	सूरज भान, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-06-2024	--
8	अशोक कुमार राणा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-06-2024	--
9	जय गोपाल वर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-06-2024	--
10	गुरप्रताप सिंह, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-06-2024	--
11	मोहन सिंह कंडा, पर्यवेक्षक	31-07-2024	--
12	प्रवीण महाजन, पर्यवेक्षक	31-07-2024	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
13	रविंदर सिंह भाटिया, सहायक पर्यवेक्षक	30-09-2024	--
14	महेश्वर दत्त, आशुलिपिक-I	30-09-2024	--
15	शंपा दास, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-09-2024	--

सभी सेवानिवृत्त अग्रज साथियों की दीर्घायु तथा उनके सुखी एवं स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए "अंकुर" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है

-- महात्मा गांधी

मीडिया की नज़र से

हिंदी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करना जरूरी : तेग सिंह

मवेरा न्यूज/नीना

चंडीगढ़, 27 सितंबर : कार्यालय महालेखाकार पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ में चल रहे हिंदी पखवाड़ा का शुक्रवार को संपन्न हो गया। इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। समापन पर विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। तेग सिंह, महालेखाकार ने अपने संबोधन के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करना चाहिए और ऐसा करना जरुरी भी है क्योंकि इससे हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी महालेखाकार ने कहा कि हिंदी भाषा को मूल रूप से



पखवाड़े के दौरान अपने विचारों को व्यक्त करते हुए।

अपनाने की आवश्यकता है ताकि हिंदी का शीर्ष से धरातल और धरातल से शीर्ष तक अविरल बहती रहे। राकेश रंजन मिश्रा, हिंदी अधिकारी और सुनील कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी के द्वारा पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन हेतु रूपरेखा तैयार की गई तथा अंकित कुमार, मनीष कुमार, कविता शर्मा, शिवकेश आदि के सहयोग से हिंदी पखवाड़ा 2024 का सफल आयोजन हुआ, जिसके लिए महालेखाकार ने शुभकामनाएं दी।

हिंदी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान जरूरी: तेग सिंह

ब्यूरो/गुड़गांव मेल

चंडीगढ़। कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ में 14 सितम्बर से 27 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा कामकाज में अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रूचि को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। इसी क्रम में कार्यालय महालेखाकार पंजाब एवं यू.टी. में बहुत धूम-धाम से हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया7 इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। शुक्रवार को कार्यालय में पुरस्कार वितरण तथा समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें विजेता प्रतिभागियों को महालेखाकार ने पुरस्कृत किया। तेग सिंह, महालेखाकार ने अपने संबोधन के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करना चाहिए और ऐसा करना जरुरी भी है क्योंकि इससे हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी7 महालेखाकार ने कहा कि हिंदी भाषा को मूल रूप से अपनाने की आवश्यकता है ताकि हिंदी का शीर्ष से धरातल और धरातल से शीर्ष तक अविरल बहती रहे। अनुवाद पर बहुत अधिक निर्भरता भी न रहे। हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर जारी माननीय गृह मंत्री जी के संदेश का जिक्र करते हुए तेग सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार अन्य भाषाओं के साथ सखी के रूप में हो तो हमें आगे चलकर और भी अच्छे परिणाम देखने को मिलेंगे।



हिंदी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान जरूरी : तेग सिंह

महालेखाकार कार्यालय ने हर्षोल्लास के साथ मनाया हिंदी पखवाड़ा

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ में 14 सितम्बर से 27 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया7 केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा कामकाज में अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रुचि को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। इसी क्रम में कार्यालय महालेखाकार पंजाब एवं यू.टी. में बहुत धूम-धाम से हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया7 इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 27 सितम्बर 2024 को कार्यालय में पुरस्कार वितरण तथा समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें विजेता प्रतिभागियों को महालेखाकार ने पुरस्कृत किया7 तेग सिंह, महालेखाकार ने अपने संबोधन के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करना चाहिए और ऐसा करना जरुरी भी है क्योंकि इससे हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी7 महालेखाकार ने कहा कि हिंदी भाषा को मूल रूप से अपनाने की आवश्यकता है ताकि हिंदी का शीर्ष से धरातल और धरातल से शीर्ष तक अविरल बहती रहे। अनुवाद पर बहुत अधिक निर्भरता भी न रहे। हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर जारी माननीय गृह मंत्री जी के संदेश का जिक्र करते हुए तेग सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार अन्य भाषाओं के साथ सखी के रूप में हो तो हमें आगे चलकर और भी अच्छे परिणाम देखने को मिलेंगे7 आशीष सिंह, उप महालेखाकार द्वारा माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी के संदेश को पढ़कर सुनाया गया7 हिंदी के प्रगामी प्रयोग और इसके प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार की नीति के अनुसार इस कार्यालय में भी प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर जोर दिया जा रहा है और इसी के तहत पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान महालेखाकार द्वारा मूल रूप से हिंदी टिप्पण-आलेखन करने वाले कार्मिकों को पुरस्कार प्रदान किया गया7 सृष्टि, अंश, अनन्या, नंदिनी, रुहानी, अनाहत आदि ने अपनी-अपनी प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को और भी रोमांचक बना दिया। कार्यक्रम के दौरान हिंदी अधिकारी ने सभागार में उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों से कहा कि एक दिन, एक लक्ष्य की नीति से सहकर्मियों को प्रेरित करने की परंपरा को अपनाते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान की जा सकती है7 राकेश रंजन मिश्रा, हिंदी अधिकारी और सुनील कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी के द्वारा पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन हेतु रूपरेखा तैयार की गई तथा अंकित कुमार, मनीष कुमार, कविता शर्मा, शिवकेश, रणधीर सिंह आदि के सहयोग से हिंदी पखवाड़ा 2024 का सफल आयोजन हुआ, जिसके लिए महालेखाकार ने शुभकामनाएं दी।









ध्वजारोहण





रॉक गार्डन, चंडीगढ़

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017